सेवारत प्रशिक्षण

एक झलक

वर्ष 1992-93

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर-पीलीभीत

प्राचार्य की लेखनी से

प्रशिक्षण शिक्षक शिक्षा की आत्मा है। अच्छा एव व्यवस्थित प्रशिक्षण कुशल, योग्य शिक्षकों को देश के निर्माता व कर्णधार के रूप में तैयार करता है।

आज, शिक्षक ज्ञान की नवीनतम विधाओं से निरन्तर अवगत, अनभिज्ञ रहे इसके लिए आवश्यक है कि सेवारत शिक्षक के निरन्तर प्रशिक्षण की व्यवस्था हो।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी जिनका कार्य शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में अध्यापन के हेतु नये आयाम स्थापित करना है।

वर्ष 1992–93 में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर में शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा सेवारत प्रशिक्षण के अन्तर्गत प्रशिक्षण, कार्यशाला, गोष्ठियाँ, सर्वेक्षण एवं परियोजना तथा प्रकाशन कार्य सम्पादित किये गये।

श्री उबैदुर रहमान सहायक अध्यापक विज्ञान सेवारत प्रशिक्षण के प्रभारी रहे और बड़ी कर्मठता से इस दायित्व को निभाया। शेष तीन अध्यापकों सर्व श्री जगदीश प्रसाद त्रिपाठी सहायक अध्यापक (सामान्य), श्री बीर नारायण गोस्वामी सहायक अध्यापक (गणित), श्री धरनीधर तिवारी सहायक अध्यापक (हिन्दी), प्रयोगशाला सहायक श्री मु० मुबीन व श्री अशोक गंगवार तथा कनिष्ठ लिपिक श्री हरवीर सिंह व कार्यालय कर्मियों के सहयोग से सम्पादित हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अवधि में श्री नरेश पन्त परियोजना अधिकारी अनौपचारिक शिक्षा बिलसन्डा का सतत सहयोग सस्थान को प्राप्त होता रहा इसके लिए संस्थान परिवार उनका आभार व्यक्त करता है।

संस्थान के अनुरोध पर श्री संजय सिन्हा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी पीलीभीत द्वारा श्री हामिद हुसैन कादरी जिला व्यायाम शिक्षक को प्रशिक्षण में खेलकूद व व्यायाम कार्यक्रमों में निरन्तर सहयोग देने हेतु संस्थान से सम्बद्ध किया गया जिससे पी० टी० व खेल के कार्यक्रम विधिवत संचालित हुये।

संस्थान के छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं से भी इसमें जब भी सहयोग माँगा गया उन्होंने दिया।

NIEPA DC
D07760

श्री मुबीन, श्री अशोक, श्री हरवीर ने इसमें कठोर परिश्रम किया।

सत्र 1992-93 में सेवारत प्रशिक्षण के अन्तर्गत केवल 10 दिवसीय या 5 दिवसीय पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण ही आयोजित नहीं किये गये अपितु कठिन विषयों के अध्यापन को लेकर अलग से गोष्ठियाँ व कार्यशाला भी आयोजित की गयी।

स्टाफ की संख्या अत्यधिक अल्प होते हुए भी गोष्ठियाँ, कार्यशाला, सर्वेक्षण कार्य एवं परियोजना चलायीं गयीं और सर्वेक्षण कार्य परियोजनाओं की आख्यायों को अलग से संकलित करने का प्रयास किया गया।

प्रत्येक प्रशिक्षण में विशेष विषय के पत्रक तैयार करवा कर प्रशिक्षणार्थियों को उपलब्ध कराये गये। संस्थान में कार्यरत शिक्षकों एवं विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत पत्रकों का संकलन भी इस पुस्तक के साथ किया जा रहा है।

प्रत्येक प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दैनिक दिनचर्या की आख्या अंकित की गई तथा अन्तिम दिवस को प्रशिक्षण का मूल्यांकन किया गया, उसका संक्षिप्त सारांश भी प्रत्येक प्रशिक्षण की आख्या के साथ संलग्न किया गया है।

संस्थान से जो प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण व अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने आते हैं, वे बेसिक परिषद के कार्यरत अध्यापक होते हैं। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, पीलीभीत संस्थान परामर्शदात्री समिति के सदस्य हैं, उनके सुझाव को प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्धारण एवं क्रियान्वयन में सदैव महत्व दिया गया। किन्तु पूरे प्रशिक्षण अवधि में एक दो कार्यक्रम को छोड़कर वांछित संख्या में प्रशिक्षणार्थी कभी नहीं उपस्थित हो पाये। अतः प्रशिक्षणार्थियों की निर्धारित लक्ष्य संख्या व आबंटित बजट को देखते हुए प्रशिक्षणार्थियों की संख्या कम आने के कारण कई कार्यक्रम दुबारा आयोजित करने पड़े। संस्थान स्टाफ की कमी के कारण इससे काफी कठिनाई आयीं।

उपर्युक्त कठिनाई के होते हुए भी संस्थान द्वारा गतवर्ष की तुलना में समुचित संख्या में प्रशिक्षण, कार्यशाला व गोष्ठियाँ, परियोजना आयोजित की गई जिसमें परिषद विद्यालयों के समस्त शैक्षिक कार्यक्रमों का समावेश करने का प्रयास किया गया।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-7760
Date 30-09-93

श्रीमती पुष्पा मानस
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बीसलपुर-पीलीभीत।

सेवारत प्रशिक्षण

भारत जैसे विशाल लोकतंत्रीय देश में लोकतन्त्र को अक्षुण्ण रखने की प्रथम अनिवार्यता नागरिकों का शिक्षित होना है। इस संदर्भ में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्तमान में शिक्षा द्वारा केवल प्रजातन्त्र समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता जैसे लक्ष्यों की वृद्धि की आशा ही नहीं की जाती वरन उत्पादन वृद्धि एवं आर्थिक विकास की भी आशा की जाती है।

राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए है अतः प्राथमिक स्तर के शिक्षा प्रशिक्षण में भी नये जीवन का आना स्वाभाविक है। वर्तमान परिवर्तित राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों के कर्त्तव्य कक्षा शिक्षण तक सीमित न रहे हैं। उन्हें शिक्षा के प्रसार और उन्नयन से सम्बन्धित प्रयोगों में भी भाग लेना है, विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के सम्बर्धन में योग देना है तथा समाज और विद्यालय को एक दूसरे के निकट लाकर क्षेत्रीय जनसमुदाय का सच्चे अर्थ में नेतृत्व करना है। औपचारिक एवं अनौपचारिक समस्त साधनों से सम्बन्धित समाज में ज्ञान का प्रसार कर उसे आलोकित करना।

इन क्षमताओं से युक्त अध्यापक तभी सुलभ होंगे जब शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था सशक्त होगी और प्रशिक्षण का एक सुनियोजित कार्यक्रम होगा। भारतवर्ष में 1854 के चार्ल्स वुड के शिक्षा घोषणा पत्र के साथ भारत में प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना प्रारम्भ हुई।

1882 के हन्टर कमीशन की संस्तुतियों ने शिक्षक प्रशिक्षण के विस्तार में प्रमुख भूमिका निभाई।

1939 में आचार्य नरेन्द्र देव समिति की संस्तुतियों शिक्षक प्रशिक्षण में मील का पत्थर सिद्ध हुई।

सर्वप्रथम 1964 में एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक "इण्डियन ईयर बुक आफ द एजूकेशन" 1969 के पृष्ठ 205 तथा 263 पर दी गई टिप्पणियों में शिक्षा शास्त्रियों, योजनाकारों, शिक्षा अधिकारियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।

अधिकांश प्रशिक्षण संस्थायें पृथक अकादमीय वातावरण में कार्यरत है और क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों से उनका कोई जीवन्त सम्पर्क नहीं है। पाठ्यक्रम बहुधा पुराने ढंग के हैं और अध्यापन की शैली समयातीत है। भाषण की शैली का बहुधा प्रयोग होता हैं और समस्त शिक्षण उतना प्रभावी नहीं है जितना होना चाहिए।

अत: सुझाव है गोष्ठी विधि—व्यक्तिगत तथा सामूहिक अध्यापन गृह, कार्य, पर्यवेक्षण, प्रोजेक्ट आदि को प्रशिक्षण संस्थाओं में यथोचित स्थान दिया जाये।

वर्ष 1966 में कोठारी आयोग ने प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए अपनी आख्या निम्नवत् दी।

प्राथमिक अध्यापकों की प्रशिक्षण संस्थाओं की बहुत ही दुर्दशा है। इस स्थिति में सुधार करने के लिए सर्वोच्च वरीयता देते हुए प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

कोठरी शिक्षा आयोग की संस्तुतिओं के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुधार किये गये और आज तक पाठ्यक्रम में निरन्तर समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप सुधार होते रहे हैं।

सेवारत प्रशिक्षण के महत्व के विषय में एन० सी० ई० आर० टी० के द इण्डियन इयर बुक आफ एजूकेशन 1964 में कहा गया है

यह धारणा भ्रामक है कि केवल पूर्व सेवा कालीन प्रशिक्षण के द्वारा चाहे वह कितना दीर्घकालीन तथा सन्तोषप्रद क्यों न हो, अध्यापक अपनी सेवा के 30 या 35 वर्षों में क्षमता पूर्वक कार्य कर सकेगा और शिक्षा के अधुनातन विकास से अवगत रहेगा। आज का जीवन द्रुतगति से बदलता जा रहा है और शिक्षा को इसके साथ तालमेल रखकर प्रगति करना है। अतएव सभी अध्यापकों के लिए सेबारत पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण का एक अनवरत कार्यक्रम बनाना आवश्यक है। जिससे वे परिवर्तन शील समाज के अनुरूप शिक्षा सम्बन्धी अपने उत्तर-दायित्व का निर्वाह कर सके।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में व्यवस्था की गई है कि जनपद के प्रत्येक परिषदीय अध्यापक को पाँच वर्ष में अवश्य एक बार पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण दे दिया जाये।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर इस ओर निरन्तर जागरूक व प्रयत्नशील है।

विद्यालयों में खेलों का महत्व व आयोजन

सम्पूर्ण सृष्टि परम सत्ता के खेल की परिव्यति हैं। इसमें मानव जीवन भी एक खेल है। विभिन्न खेल जीवन की खेल समझकर जीने का संदेश देते है। जीवन को खेल समझ कर जीने की भावना के विस्तार से इस पृथ्वी के सारे संघर्ष शान्ति में बदल सकते हैं। और सर्वत्र सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए खेल मानव जीवन में अत्यावश्यक हैं। वाल्यावस्था में इनका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इस अवस्था में शरीर और मन का विकास सर्वाधिक होता है। विकास के साथ-साथ खेल से सहयोग की भावना तो बढ़ती ही है सेवा, सहकारिता, परोपकारिता, सामाजिक एकता, न्यायप्रियता, अनुशासन एवं प्रतिस्पर्धा और समता जैसे उच्च मानवीय गुणों का सम्बर्द्धन होता है।

विद्यालय शिक्षा ग्रहण करने का सोपान है जिसमें बच्चों का सर्वांगीण विकास के साथ ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान प्राप्त करने के लिए सुगठित शरीर की आवश्यकता होती है क्योंकि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है" और "तन्दुरुस्ती हजार नियामत" के आधार पर भी हमें स्वस्थ तो रहना ही चाहिए। इसीलिए विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद की भी व्यवस्था रखी जाती है क्योंकि पढ़ने से जब मस्तिष्क थक जाय तो खेलों से शरीर में पुनः वही चुस्ती फुर्ती आ जाती है। अपार ज्ञान का भण्डार उस समय फीका पड़ जाता है जब शरीर साथ न दे। सुन्दर ज्ञान के साथ सुन्दर शरीर भी आवश्यक हो जाता है।

उर्दू के विद्वानों का कहना है "जिन्दगी के सभी मजे तन्दुरुस्ती के साथ ही हासिल हो सकते हैं।" यदि शरीर स्वस्थ न होगा तो शिक्षा ग्रहण करने कौन आयेगा। संस्कृत के विद्वानों ने स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन और सबसे महत्वपूर्ण साधन माना है "शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्"।

शिक्षा जीवन के लिए होती है। जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य शान्ति और आनन्द प्राप्त करना है। यह आनन्द और शान्ति विद्यालय जाकर उचित शिक्षा

से ही सम्भव है। क्योंकि इसके बिना हम किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते हैं। शिक्षा वह Master Key (मास्टर की) है जो जीवन संग्राम की रहस्य नयी मंजूषा के हमें अमूल्य और उपयोगी रत्न प्रदान करती है। इसे पाने के लिए हमें सतत् प्रयत्नशील होना चाहिए ताकि सफलता, रहस्य के ताले में बन्द न रह सके।

शिक्षा का उद्देश्य चतुर्दिक उन्नयन करना है। जिससे स्वस्थ शरीर का विशेष योगदान है जो खेलकूद से ही प्राप्त हो सकता है। अतः शिक्षा और खेल एक दूसरे के घनिष्ठ रूप से पूरक हैं। 'काया राखे धर्म' के अनुसार भी सभी धर्मों की साधना शरीर से ही है। अतः सर्वविदित हैं कि शिक्षा के साथ खेलों को भी महत्व प्राप्त है।

हर खेल में अंग संचालन होता है जिससे हमारी मांस पेशिया स्वस्थ और वलिष्ठ होती हैं। व्यायाम प्राण शक्ति को भी बढ़ाता है। अनेक विषयों का ज्ञान हम खेल के द्वारा ही पा लेते हैं। शिक्षा और खेलकूद का निकटीय सम्बन्ध ही है विरोध तो कहीं पर दिखता हीं नहीं अतः जीवन में जितना महत्व शिक्षा का है उतना ही खेलों का भी। क्योंकि हमारे पूर्व प्रधातमन्त्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू के भी खेलों के प्रति यही भाव थे "खूब खेलो डटकर खेलो"।

शिक्षा जीवन को सफल बनाती है तो खेलकूद शरीर को स्वस्थ एवं सशक्त बनाकर सफल बनाते हैं। आज संसार में इन खेलों का महत्व वढ़ता ही चला जा रहा है। ओलम्पिक खलों का आयोजन, एशियाड---82 की सफलता केवल खेल प्रदर्शन की भावना पर अभिभूत नहीं थी बल्कि अन्य मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाने में यह सफल रहे हैं। निष्कर्ष रूप में जो गुण ज्ञानोपदेश से प्राप्त नहीं होते वे खेलकूद के आयोजनों से खेल खेल में ही प्राप्त हो जाते हैं। अतः विद्यालय में शिक्षा देने के साथ खेलकूद की अनिवार्यता एवं आयोजन अपेक्षित है।

खेल के सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक महत्व को दृष्टिगत रखते हुये शासन द्वारा प्रत्येक वर्ष इनके आयोजन कराये जाने के निर्देश प्राप्त होते है जिनके अनुपालन में विद्यालय स्तर से प्रदेश और देश स्तर तक इनके आयोजन कर अच्छे खिलाड़ियों का चयन किया जाता है जो विदेशों में भी अपना शौर्य प्रदर्शित करते हैं। किन्तु हम लोगों का दुर्भाग्य है कि खेलों के समुचित अवसर, मैदान उपकरण विद्यालय में न होने के कारण इनके आयोजन तो होते है किन्तु जितने सफल होने चाहिये, नहीं हो पाते हैं। अच्छा हो यदि हम विद्यालयों में उक्त कमियों को दूर कर छात्रों की दिनचर्या में खेलों का यथोचित महत्व देते हुए इन्हें हर त्यौहार, राष्ट्रीय पर्व समारोह के समय आयोजित करें। राज्य शैक्षिक

अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उ० प्र० लखनऊ द्वारा इसे विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि विद्यालय में खेलों का विशेष योगदान है अतः इनके आयोजन में हमें सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिय तभी हमारी शिक्षा को पूर्ण सफलता मिलेगी और हम छात्र का सर्वांगीण विकास करने में सफल होंगे।

प्रस्तुति

हामिद हुसैन कादरी

जिला व्यायाम शिक्षक

पीलीभीत

विशिष्ट-शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, परिषद, नई दिल्ली द्वारा विशिष्ठ शिक्षा नामक एक कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया है। जिसका उद्देश्य समाज के एक ऐसे बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करना है जो शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग हैं और जो इन कमियों के कारण सीखने में कठिनाई अनुभव करते हैं। ऐसे बच्चों को सीखने में कठिनाई अनुभव करने वाले "विशिष्ट बच्चों" की संज्ञा दी गयी है। इस योजनान्तर्गत प्रत्येक जनपद के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में विशिष्ट शिक्षा विभाग की स्थापना हैं जिसमें पर्याप्त साज सज्जा के साथ-साथ विशिष्ट शिक्षा में प्रशिक्षित स्टाफ रहेगा। यह विभाग अपने जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को विशिष्ट शिक्षा में प्रशिक्षित करेगा जिससे वे अपने विद्यालयों के इन विशिष्ट बच्चों की पहचान कर सके। उनकी कठिनाइयों और आवश्यकताओं को जान सके और उसी के अनुरूप उनकी शिक्षा व्यवस्था कर सकें।

प्रायः यह देखा गया है कि समाज में बहुत से ऐसे बच्चे होते हैं जो किसी शारीरिक या मानसिक दोष का शिकार होते हैं ऐसे बच्चे समाज के साथ-साथ माता-पिता की उपेक्षा के भी शिकार होते हैं। फलस्वरूप इनमें से अधिकांश बच्चे स्कूल नहीं जा पाते और शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। जो बच्चे विद्यालय जाते है उनमें से भी अधिकांश शिक्षा पूरी किए बिना ही बिद्यालय छोड़ देते हैं। इस प्रकार इन बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या है जो शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से वंचित रह जाती हैं और निरक्षरता के प्रतिशत में वृद्धि करती हैं। शिक्षा के अभाव में वे आत्मनिर्भर नहीं बन पाते और अपनी आवश्यकताओं के लिए समाज पर निर्भर हो जाते हैं और समाज इन्हें अपने पर भार महसूस करता है। इन बच्चों की उपेक्षा का मुख्य कारण समाज में व्याप्त इनके बारे में परम्परागत विचाराधारा है जिसके कारण इनको उपेक्षित छोड़ दिया जाता है।

विशिष्ट बच्चों के प्रति परम्परागत विचारधारा—

1—सीखने के आधार पर प्रत्येक कक्षा में बच्चों के कुछ समूह होते हैं।

2—एक समूह ऐसा होता है जिसकी प्रगति कम होती है।

3—सीखने में कम प्रगति इनकी व्यक्तिगत कमियों के कारण होती है।

4—इन बच्चों को विशेष सहायता की आवश्यकता होती है।

5—प्रयास के बाद भी इन्हें सामान्य बच्चों की तरह विकसित नहीं किया जा सकता है।

6—ऐसे बच्चों को विशिष्ट विद्यालयों में हीं रखकर शिक्षा दी जानी चाहिये।

इस उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण के कारण इन बच्चों को या तो विद्यालय में लाया ही नहीं जाता और यदि प्रवेश दिलाया जाता है तो पर्याप्त सहायता नहीं मिल पाती। इनमें से अधिकांश बच्चे ऐसे होते हैं जिनमें कोई शारीरिक या मानसिक दोष होता है लेकिन योग्यतायें एवं क्षमतायें सामान्य बच्चों से कम नहीं होती हैं इन्हें अवसर दिया जाये तो इनकी योग्यतायें, क्षमतायें विकसित हो सकती हैं। हमारे यहाँ ऐसे विद्यालयों की कमी है जहाँ विशिष्ट बच्चों को शिक्षा दी जाती है दूसरे ये अधिक खर्चीले भी हैं। इस कारण सभी अभिभावक इन विद्यालयों में अपने बच्चे नहीं भेज सकते। ऐसी स्थिति में यही विकल्प है कि इन बच्चों को सामान्य विद्यालय में रखकर शिक्षा दी जाये। प्रत्येक कक्षा में इनकी संख्या 3-5 तक रखी जा सकती हैं। सामान्य बच्चों के साथ रखकर शिक्षा देने में इनके प्रति स्पर्धा की भावना विकसित होगी और अधिक प्रगति कर सकेंगे। इन बच्चों के प्रति समाज को शिक्षकों को अपना दृष्टिकोण बदलना होगा तभी इनकी सहायता हो सकेगी।

नवीन विचार धारा—

1—प्रत्येक बच्चे को किसी भी स्तर पर सीखने में कठिनाई हो सकती है।

2—सीखते सम्बन्धी कठिनाई पाठ्यक्रम एवं बच्चों की आवश्यकताओं के बीच प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होती है।

3—शिक्षक को इनकी प्रगति की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी चाहिये।

4—इनकी सहायता के लिए दृढ़ संकल्प हो।

5—शारीरिक व मानसिक दोष होते हुये भी इनको सहायता दी जाय तो इनका विकास सामान्य बच्चों की तरह किया जा सकता है।

इस प्रकार इन बच्चों के प्रति दृष्टिकोण बदल कर इनकी सहायता की जायें तो इनका विकास सम्भव है। नई शिक्षा नीति 1986 में भी इस बात पर बल दिया गया है कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है इसलिए प्रत्येक को शिक्षा प्राप्त करने हेतु समान अवसर दिये जायें। ऐसे

बच्चों में या तो दिखाई देने वाले दोष पाये जाते हैं या उनके व्यवहार को देख कर उनकी कमियों का पता लग पाता है। सबसे पहले अध्यापक को इनकी पहचान करना उनकी कठिनाईयों व आवश्यकताओं का जानना तथा उसके अनुसार सहायता आवश्यक हैं।

विशिष्ट बच्चों की विशेषतायें—

1—सीखने में कम प्रगति
2— किसी भी बात को बार-बार बताने के बाद समझना
3—शरीर में दिखाई देने वाले कोई दोष
4—मांस पेशियों के नियन्त्रण का अभाव
5—स्मरण शक्ति का कम होना
6—असामान्य व्यवहार
7— बोलते में कठिनाई
8—उच्चारण सम्बन्धी दोष
9— श्रवण शक्ति कम होना
10—साथी पर अधिक निर्भर करना
11— अध्यापक को पढ़ाते समय उसके मुँह की ओर ताकना
12—श्यामपट पर लिखे हुए को कापी पर उतारने में गल्तियाँ करना आपका अपने साथी से बार-बार पूछना।
13—गृह कार्य करके न लाना।
14—अध्यापक से प्रश्न बार-बार दोहराने का आग्रह करना।
15—अध्यापक की बात सुनने के लिए कान को उसकी ओर करना या हाथ रखना।
16—बैठने का अनुचित ढंग।
17—चलने में कठिनाई।
18—जल्दी थकान का अनुभव करना।

अध्यापकों के अनुरोध—

विशिष्ट बच्चों की शिक्षा व्यवस्था हेतु शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक स्वयं भी उनकी सहायता कर सकते हैं और दूसरों को भी उनकी सहायता के लिए तैयार कर सकते हैं। बच्चों में कुछ कमियाँ ऐसी भी हो सकती हैं जिनका पता अभिभावकों को नहीं चल पाता और जिनका निदान भी हो सकता है। इस बारे में अभिभावकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना है। अध्यापकों को निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये तथा उनकी शिक्षा व्यवस्था में निम्न बातों को अपनाना चाहिये।

1—ऐसे बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ रखकर ही शिक्षा दी जाय।

2—उनके प्रति सहानुभूति रखें व उन्हें सहयोग दें।

3—बच्चों को अपने दोषों का अहसास न होने दें।

4—किसी भी अच्छे कार्य के लिये उनकी प्रशंसा अवश्य करें।

5—पढ़ाते समय उन्हें कक्षा में अपने पास ही एक ओर बैठायें।

6—उनकी अतिरिक्त सहायता करें।

7—अन्य बच्चों को उनके सहयोग व सहायता के लिए तैयार करें।

8—दूसरे बच्चों से उनके साथ साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहें तथा आवश्यकता पड़ने पर अभिभावकों से अपने बच्चों से ऐसे बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहलवायें।

9—पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों में भी इन्हें सामान्य बच्चों के साथ सम्मिलित करें।

10—उनकी सहायता के लिए दृढ़ संकल्प हों।

11—सभी अध्यापकों को इस कार्य में सहयोग करना चाहिये।

उबैदुर रहमान
सहायक अध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर-पीलीभीत।

विद्यालय एवं उसका वातावरण

बच्चा घर में रहता है तो वह परिवार के विभिन्न सदस्यों के सम्पर्क में रहता है। जब उसका घर से बाहर निकलना परिवेश में निकलना होता है। वह तो यहाँ समाज के भिन्न-भिन्न बच्चों तथा व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। जब बच्चा विद्यालय जाता है तो उसका सम्बन्ध एक ऐसे समुदाय से होता है जो उसके पारिवारिक समुदाय से भिन्न होता है यहाँ की व्यवस्था एवं कार्यक्रम निर्धारित उद्देश्यों के अन्तर्गत होते हैं जो बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर निश्चित किये जाते हैं। यहाँ बच्चे में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उन गुणों का समावेश होता है जिनकी शिक्षा में व्यवस्था की जाती है बच्चे को योग्य नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास किया जाता है। इस प्रकार यहाँ का वातावरण व कार्यक्रम तथा व्यवस्था समाज से भिन्न होती है। बच्चे के विकास में सभी पक्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। विद्यालय में विभिन्न शिक्षण एवं शिक्षणोत्तर क्रिया कलापों के अतिरिक्त विद्यालय के वातावरण का अपना महत्व है।

विद्यालय के वातावरण का बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है इस वातावरण में विद्यालय सौन्दर्यीकरण विद्यालय भवन का सौन्दर्यीकरण, विद्यालय परिसर का सौन्दर्यीकरण, विद्यालय वाटिका का निर्माण, छात्रों का आपसी सम्बन्ध, अध्यापक एवं छात्रों का सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। विद्यालय भवन सौन्दर्यीकरण में विद्यालय भवन साफ सुथरा होना चाहिये। कक्षा में शिक्षाप्रद पोस्टर सूक्तियाँ, महापुरुषों के चित्रों, विद्यालय सूचनापट, जिसमें प्रतिदिन के मुख्य क्रियाकलाप, विद्यालय में अच्छे प्राप्तांकों से उत्तीर्ण छात्रों के नाम, उपस्थिति में नियमित छात्रों के नाम अंकित होने चाहिये यह सब जो बच्चों में अच्छा प्रभाव डालते हैं उनमें सीखने की प्रेरणा पैदा करते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों के नाम अंकित हों।

विद्यालय परिसर साफ सुथरा होना चाहिये। विद्यालय में पुष्प वाटिका तथा क्यारिया बनी हों। जिनकी देखरेख एवं निराई गुड़ाई बच्चों से ही कराई

जाये पानी के स्रोत नल कुओं की सफाई का कार्य सही हो। विद्यालय में स्थान के आधार पर पर्याप्त स्थान होने पर उनके बैठने की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिये कि सभी कक्षायें इतने फासले पर हों कि उनकी शिक्षा में व्यवधान न पड़े। बच्चे जब कक्षा में बैठें तो पंक्ति से बैठें। विद्यार्थी अध्यापक एवं विद्यार्थी-विद्यार्थी सम्बन्ध मधुर हो जिससे बच्चे एक आदर्श समाज की नींव रखने की योग्यता अपना सकें। अध्यापकों का व्यवहार छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण एवं सहयोग पूर्ण होना चाहिये। अध्यापक एक पथ प्रदर्शक एवं सुधारक होता है उसका बर्ताव सुझावात्मक होना चाहिये आदेशात्मक नहीं होना चाहिये उसका व्यवहार प्रेरणा दायक एवं शिक्षाप्रद हो बच्चा अध्यापक को आदर्श रूप में देखता है अतः अध्यापक में वे सभी विशेषतायें होनी चाहिए जो एक आदर्श नागरिक में वांछित है। तभी बच्चे एक आदर्श नागरिक बन सकेंगे। यद्यपि यह सच है कि बच्चे समाज में उन बुराईयों को सीख जाते हैं जो विद्यालय में उन्हें दूर रहने के लिये बताई जाती है लेकिन विद्यालय के वातावरण का बच्चों पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है। विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिये जिससे बच्चे उन कार्यक्रमों में भाग लेकर अपना सके। आज समाज तथा विद्यालय में यही भिन्नता है बालक को विद्यालय में उन गुणों के सैद्धान्तिक पक्ष का ज्ञान दिया जाता है। लेकिन समाज में उन अवगुणों को व्यवहारिक रूप से अपना लेता है जिससे उस पर सैद्धान्तिक ज्ञान का प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः विद्यालय में इस प्रकार के कार्यक्रम अपनाये जाये जिसमें बच्चे भाग ले सकें। और वांछित सामाजिक व नैतिक गुणों को अपना सकें विद्यालय में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सभायें, अभिभावक गोष्ठी आदि का आयोजन वार्षिक खेलकूद सहकारी दुकान प्राथमिक उपचार के कार्यक्रम बाल मेला का आयोजन प्रदर्शनियाँ शैक्षिक मेलों का आयोजन किया जाना चाहिये प्रतिदिन के कार्यक्रम, प्रार्थना से प्रारम्भ किया जाये इसमें बच्चों के बोलने का अवसर दिया जाये ऐसे बच्चों की प्रशंसा की जाये जिन्होंने अच्छे कार्य किये हो, उपस्थित में अच्छे हो, नैतिक गुणों में अच्छे हो, खेलों में अच्छा प्रदर्शन किया हो, सफाई में अच्छे हों, विद्यालय के किसी विशेष कार्य में सहयोग दिया हो, गृह कार्य ठीक प्रकार से किया हो, घर परिवार में सम्बन्ध अच्छा हो। पाठयोत्तर क्रिया कलापों में बच्चों की भागेदारी आवश्यक है तभी उन्हें सीखने का अवसर मिलेगा और वे व्यवहारिक रूप से उन गुणों को अपना सकेंगे।

इस प्रकार से हम देखते हैं बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये विद्यालय का बातावरण विशेष महत्वपूर्ण है। किसी स्थान को देखकर उसके होने वाले क्रिया कलापों का अनुमान लगाया जा सकता है विद्यालय को देखकर लगना चाहिये कि इसमें कुछ देने की भावना है। प्रारम्भ में थोड़ी मेहनत व सहयोग

की आवश्यकता होगी बाद में बच्चों में जब इनके प्रति लगाव पैदा हो जायेगा तब वह स्वयं करते रहेंगे अध्यापक केवल मार्ग दर्शन करेंगे। अध्यापक अध्यापकों के बीच अच्छा सहयोग हो यदि किसी में ठीक तालमेल नहीं है तो उसे इस प्रकार से निभायें कि बच्चों पर बुरा प्रभाव न पड़े। बच्चों के बीच विवादों को सहानुभूति के साथ तय करें जिससे कोई बच्चा पक्षपात का दोषारोपण न कर सके। बच्चों की बातें धैर्य से सुने। उन पर ध्यान दें और समाधान करें। बच्चों में आपसी प्रेम व सदभाव बनायें। इस अवस्था में बच्चों में ऊँच नीच जाति का भेद भाव भी नहीं होता है, अतः बच्चों में एक दूसरे की सहायता व सहयोग के लिए अच्छी आदतों का बिकास सरलता से किया जा सकता है।

उबैदुर रहमान
सहायक अध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बीसलपुर-पीलीभीत।

सेवारत–प्रशिक्षण वर्ष 1992-93

जूनियर स्तरीय दस दिवसीय पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण दिनांक 11-1-93 से 20-1-93 तक

अध्यापकों की सूची

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
1	श्री शोभा राम	जू० हा० स्कूल जोगीठेर	बरखोड़ा
2	श्री कढ़े राम	,, ,, खमरियापुल	ललौरी खेड़ा
3	श्री शान्ती स्वरूप	,, ,, ,,	,,
4	श्री हीरा लाल	,, ,, नगरिया कालौनी	अमरिया
5	श्री ओम प्रकाश	,, ,, आमडार	बरखेड़ा
6	श्री मेवा राम	,, ,, सिसैया जलालपुर	बीसलपुर
7	श्री ओम प्रकाश	,, ,, कनाकोर	ललौरी खेड़ा
8	श्री रामचन्द्र सक्सेना	,, ,, बिहारीपुर हीरा	बिलसण्डा
9	श्री छेदा लाल	,, ,, चुरासकतपुर	बीसलपुर द्वितीय
10	श्री रामबहादुर	,, ,, बढ़ैरा	बरखेड़ा
11	श्री रामपाल	,, ,, अर्जुनपुर	बीसलपुर
12	श्री दीना नाथ	,, ,, रामनगर	बरखेड़ा
13	श्री हेमराज	,, ,, मोहम्मदपुर भजा	बीसलपुर
14	श्री जगन्नाथ प्रसाद	,, ,, परेवा अनूप	बरखेड़ा
15	श्री भूपराम	,, ,, दियोहना	बरखेड़ा
16	श्री लालता प्रसाद	,, ,, अकवराबाद	बिलसण्डा-द्वितीय
17	श्री मंगली प्रसाद	,, ,, ईटगांव	,, ,,
18	श्री गोपाल	,, ,, बमरोली	,, ,,
19	श्रीमती सुदेश धीर	,, ,, अमरिया	अमरिया
20	श्री बाबूराम	,, ,, गझाडा	बरखेड़ा
21	श्री नन्दराम	,, ,, घुंघचिहाई	पूरनपुर-पूर्वी
22	श्री सिया राम	,, ,, ईटगाँव	बिलसण्डा-द्वितीय
23	श्री कन्हई लाल	,, ,, जहानाबाद	ललौरीखेड़ा

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
24	श्री सकलदेव सिंह	जू० हाई स्कूल कबीरगंज	पूरनपुर-पूर्वी
25	श्री बुद्धसेन	,, ,, जहानाबाद	ललौरीखेड़ा
26	श्री सुरेश चन्द्र शर्मा	,, ,, बरखेड़ा	बरखेड़ा
27	श्री ओमप्रकाश	,, ,, ,,	,,
28	श्री नत्थू लाल	,, ,, ,,	,,
29	श्री हेमराज	,, ,, कंसगंजापूरन	पूरनपुर
30	श्री ख्यालीराम	,, ,, जंगरोलीपुल	ललौरीखेड़ा
31	श्री नत्थूलाल	,, ,, खनंका	बीसलपुर
32	श्री भगवान दास	,, ,, टाहपौटा	मरौरी
33	श्री झांझन लाल	,, ,, ,,	,,
34	श्री सुन्दर लाल	,, ,, वस्थना	मरौरी
35	श्री झम्मन लाल	,, ,, खजुरिया पचपेड़ा	मरौरी
36	श्री शफीउल्ला खां	,, ,, माधौटांडा	पूरनपुर-पूर्वी
37	श्री रणजीत सिंह	,, ,, गभियसहराई	,,
38	श्री डालचन्द्र गंगवार	,, ,, निसराबरातबोझ	अमरिया नं० 1

मूल्यांकन प्रपत्र

दस दिवसीय जू० स्तरीय सेवारत प्रशिक्षण

1—दस दिवसीय प्रशिक्षण आपको कैसा लगा।

बिल्कुल नहीं	/	रुचिकर	/	कम रुचिकर	/	अधिक रुचिकर	
1	/	22	/	2	/	11	=38

2—आपने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है उससे आप कितने सन्तुष्ट हैं।

बिल्कुल नहीं	/	कम	/	अधिक	/	बहुत अधिक	
12	/	2	/	21	/	12	=38

3—प्रशिक्षण में सभी विषयों की जो चर्चा हुई क्या उससे सन्तुष्ट हैं।

सन्तुष्ट	/	सन्तुष्ट नहीं	
26	/	12	=38

4—क्या प्रशिक्षण में प्राथमिक स्तरीय सभी विषयों की चर्चा हुई हैं।

बिल्कुल नहीं	/	हाँ	/	नहीं	
3	/	×	/	5	=38

5—विभिन्न विषयों के विषय वस्तु व शिक्षण विधियों की जो जानकारी दी गई उससे आप किस सीमा तक सन्तुष्ट हैं।

बिल्कुल नहीं	/	कम	/	अधिक	/	बहुत अधिक	
3	/	1	/	24	/	10	=38

6—प्रशिक्षण में विभिन्न विषयों के प्रभावी प्रशिक्षण हेतु जिन शिक्षण सामग्रियों, उपकरणों, किटों के प्रयोग से किये गये उनसे छात्र लाभान्वित होंगे और शिक्षा के स्तर में सुधार होगा।

हाँ	/	नहीं	
37	/	1	=38

7—क्या आप इसी प्रकार शिक्षण हेतु शिक्षण सामग्रियों उपकरणों किटों स्थानीय परिवेश सें प्राप्त सहायक सामग्री का प्रयोग करेंगे।

हाँ	/	नहीं	
38	/	×	=38

8—विज्ञान एवं गणित शिक्षण में विज्ञान एवं गणित की किटों के प्रयोग से आप किस सीमा तक सन्तुष्ट हैं।

बिल्कुल नहीं	बहुत कम	सामान्य	बहुत अधिक	
6	×	22	12	=38

9—विज्ञान एवं गणित विषयों के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु संक्षेप में अपने सुझाव दीजिये।

गणित और विज्ञान में अधिक से अधिक प्रशिक्षण दिया जाये

10—आपको विभिन्न विषयों में कौन से विषय का प्रशिक्षण अधिक रोचक लगा।

हिन्दी	विज्ञान	गणित	तकनीकी शिक्षा	
×	20	×	8	=38

11—प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी और रोचक बनाने हेतु अपने सुझाव दीजिये।

1- विज्ञान के अधिक प्रयोग कराये जाये।

2- सहायक सामग्री का प्रयोग हो।

3- गणित/विज्ञान किटों का अधिक प्रयोग हो।

मृतक आश्रित एवं नवनियुक्त अध्यापकों का अभिनवीकरण प्रशिक्षण :

जनपद पीलीभीत के परिषदीय सहायक अध्यापक मृतक आश्रित व नवनियुक्त दस दिवसीय दो फेरे अभिनवीकरण प्रशिक्षण के आयोजित किये गये इसका उद्देश्य मृतक/नवनियुक्त अध्यापकों को शिक्षण प्रक्रिया, नियम, विधियों प्रणाली, प्रविधियों से अवगत कराना था ताकि वे समझ सकें कि शिक्षण एक कला है इसे गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है उनके पढ़ाने के ढंग का छात्रों पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा अत: शिक्षण में उनके द्वारा सजगता व जागरुकता की आवश्यकता है। शिक्षण को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यधिक आवश्यक है। इस लिये इस प्रशिक्षण में ऐसे विषयों का समावेश किया गया जिससें उन्हें शिक्षण कार्य सें मदद मिल सके।

इसी प्रकार जनपद में इस वर्ष नवनियुक्त अध्यापकों को शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किये एक लम्बा समय हो गया था और ये अध्यापक शिक्षण के वर्तमान आयामों, पक्षों शिक्षण विधियों व शैक्षिक जगत में हुए परिवर्तनों से एक दम अनभिज्ञ थे। इसका शिक्षण का पूर्व प्राप्त ज्ञान भी लुप्त प्राय: हो रहा था अत: जिला बेसिक अधिकारी पीलीभीत श्री संजय सिन्हा के अनुरोध पर इन्हें संस्थान में प्रशिक्षण हेतु बुलाया गया। और दस दिवसीय गहन प्रशिक्षण देने का प्रयास किया गया। नव नियुक्त अध्यापक/अध्यापिकाओं ने अत्यधिक रुचि लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। विभिन्न प्रकार की जिज्ञासायें की। समस्त प्रशिक्षणार्थियों का सहयोग अनुपम था। प्रशिक्षण के अन्त में उनके द्वारा आकर्षक, शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

इस प्रकार मृतक आश्रित व नवनियुक्त अध्यापकों के प्रशिक्षण से प्रशिक्षणार्थी एवं संस्थान दोनों लाभान्वित हुये।

श्रीमती पुष्पा मानस
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बीसलपुर–पीलीभीत।

बहु कक्षा शिक्षण

बहु कक्षा शिक्षण की एक व्यवस्था है। यह शिक्षण की ऐसी योजना हैं जिसमें एक शिक्षक एक समय या वादन में एक से अधिक कक्षाओं में एक साथ अध्यापन कार्य करता है।

बहु कक्षा शिक्षण पद्धति भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही संचालित रही है और आज भी उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में उपयोग में लाई जाती है।

वर्तमान में 40 छात्र-छात्राओं पर एक अध्यापक की नियुक्ति का प्राविधान है। अतः आज भी काफी संख्या में ऐसे विद्यालय हैं जो एक अध्यापकीय हैं। आपरेशन ब्लैक-बोर्ड योजना के अन्तर्गत जनपदों के आने के कारण अब एक अध्यापकीय विद्यालय 40 की छात्र संख्या विद्यमान होने पर भी दो अध्यापकों वाले विद्यालयों में परिवर्तित कर दिये गये हैं। पर दो अध्यापकों को वर्तमान में विद्यालय की 5 कक्षाओं को पढ़ाना है। अतः मृतक आश्रित व नव नियुक्त अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे बहु कक्षा शिक्षण की उपादेयता, क्रियान्वयन से भली भांति अवगत हों, तभी वे समस्त कक्षाओं का अध्यापन कार्य अच्छी तरह से कर पायेंगे और कक्षा के गुणात्मक विकास में सहायक होंगे।

बहु कक्षा शिक्षण में छात्र-छात्राओं के कक्षा के स्तर, शारीरिक, मानसिक विकास, पाठ्य क्रम, वादन, विषय सभी का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इस लिए यह आवश्यक है कि बहुकक्षा शिक्षण के सफल संचालन करने के लिए उसकी योजना विचार विमर्श कर ढंग से बनवा ली जाए।

बहुकक्षा-शिक्षण को संचालित या क्रियान्वित करने में अनेक समस्याएँ या कठिनाइयां आतीं हैं—जैसे कक्षा में बैठने का प्रबन्ध, समय सारिणी तैयार करना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तथा संगठन सम्बन्धी।

अध्यापक को चाहिए कि इन समस्त कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित कार्यक्रम बनायें ताकि बहुकक्षा शिक्षण सुचारू रूप से संचालित हो सके।

1— कक्षाओं की बैठने की व्यवस्था ठीक करना।

2 — विभिन्न विषयों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय समय-सारिणी का निर्माण करें।

बहु कक्षा शिक्षण में, शिक्षण अधिगम में अध्यापक को निम्नलिखित कठिनाइयां आ सकती हैं।

1— बहु कक्षा शिक्षण वाले विद्यालयों में भी पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें उसी प्रकार पूरी करनी होती हैं जैसे अन्य विद्यालयों में। अतः अध्यापक केवल मुख्य विषय पर ही ध्यान देते हैं। जिससे छात्र का उस स्तर का गुणात्मक विकास नहीं हो पाता जैसा होना चाहिए।

2— छोटी कक्षाओं के छात्रों का शिक्षण अधिकांशतः बड़ी कक्षा के बुद्धिमान छात्र के माध्यम से कराया जाता है। परिणाम स्वरूप छोटी कक्षाओं का शिक्षण उपेक्षित रह जाता है।

3— अध्यापक संख्या कम होने के कारण व कक्षा 5 की बोर्ड परीक्षा होने के कारण कक्षा 5 की परीक्षा परिणाम पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है और कला, शिल्प व अन्य पाठ्य सहगामी क्रिया-कलाप उपेक्षित रह जाते है।

4— अध्यापक विभिन्न मानसिक स्तर के छात्र/छात्राओं पर एक साथ ध्यान नहीं दे पाता जोकि छोटी कक्षाओं में अत्यधिक आवश्यक है।

5— सेवापूर्व अध्यापकों को इस प्रकार प्रशिक्षित नहीं किया जाता कि अध्यापक बनने पर वे बहुकक्षा-शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से संचालित कर सकें।

6— वर्तमान समय में प्राथमिक विद्यालयों में दो बड़े कक्ष, एक छोटा कक्ष व एक बरामदा होता है। इसलिए छात्रों के लिए स्थान का अभाव होता है। परिणामस्वरूप दो कक्षाएं एक ही कक्ष में बैठानी पड़ती हैं। जिससे एक कक्षा का अध्यापन दूसरी कक्षा में व्यवधान उपस्थित करता है।

7— बहुकक्षा शिक्षण तभी आकर्षक व प्रभावशाली हो सकता है जबकि शैक्षिक उपकरण विद्यालय में उपलब्ध हों किन्तु वर्तमान में ऐसा नहीं है।

अध्यापक उपर्युक्त कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं—

चूंकि अध्यापक दो ही हैं और 42 छात्रों पर 5 कक्षाएं हैं। इसलिए छात्रों की बैठने की व्यवस्था इस प्रकार की जाए कि जहाँ छात्र/छात्राओं को बैठने में सुविधा हो वहीं अध्यापकों को उनको पढ़ाने में भी सुविधा हो। छात्राओं की बैठने की योजना बनाते समय इस प्रकार का ध्यान रखे कि उनका

ध्यान कम से कम विचलित हो और विभिन्न स्तर की कक्षा पढ़ाने में भी सुविधा हो। पाठ्यक्रम की क्रमबद्धता को ध्यान में रखकर भी छात्रों को एक साथ बैठने की व्यवस्था की जाए तो अधिक उपयुक्त होगा।

कक्षा 1 में ह्रास व अवरोध की समस्या अधिक होती है। अतः कक्षा 1 पर प्रधानाध्यापक को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कक्षा 1 में खेल के द्वारा, गीतों, कविताओं, चित्रों के माध्यम से यदि शिक्षण कार्य करवाया जाये तो अधिक उपयुक्त होगा।

बहु कक्षा शिक्षण तभी सफल हो सकता है जब शिष्य से शिष्याध्यापक के रूप में छोटी कक्षाओं में शिक्षण कार्य में मदद की जाये। इससे कक्षा तथा विद्यालय में अनुशासन की समस्या भी हल होगी और छात्र जब अपने से बड़े कक्षा के छात्र को अध्यापक के रूप में देखेंगे तो उन्हें आनन्द की अनुभूति होगी व नयी प्रेरणा मिलेगी। भय का वातावरण समाप्त हो जावेगा।

श्रीमती पुष्पा मानस
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर

कला शिक्षण

प्राथमिक कक्षाओं में चित्रकला विषय के शिक्षण हेतु छात्रों में विषय सम्बन्धी अभिरूचि जागृत करने के लिये कतिपय महत्वपूर्ण बिन्दु :—

1. **कला की परीभाषा, महत्व एवं क्षेत्र :** –भावों की वह क्रिया जो जीवन को सदैव सुन्दर बनाती है और उसमें आनन्द उत्पन्न करती है, कला है। कला ही जीवन है। "कला आत्मा का ईश्वरीय संगीत है" (महात्मा गांधी)। "God is the Eternal Painter and Nature is His artistic creation" साधारणतया हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कला मात्र एक विषय ही नहीं एवं सभी विषयों को समझने एवं व्यवहारिक रूप में सहायता देती हैं। कला व्यक्ति में मधुरता, रोचकता एवं सुन्दरता उत्पन्न करने की भावना को विकसित कर रचनात्मक ज्ञान देती है एवं शुभाचरण निर्माण की ओर विद्यार्थी को अग्रसर करती है।

कला का क्षेत्र व्यापक हैं वह जीवन के प्रत्येक पक्ष को स्पर्श करती है उस के अभाव में जीवन रूखा एवं नीरस रह जाता है अर्थात कला ही जीवन है।

2. **कला के स्वरूप :**—वैसे कला एक सरल सा परिचित शब्द ज्ञात होता है परन्तु इसकी विभिन्न शाखायें हैं जैसे–शिल्पकला, मूर्तिकला, ललित कला भवन निर्माण कला, चित्रकला एवं नाट्य कला आदि चौंसठ कलायें होती हैं जिनसें 32 कलायें मानव को आध्यात्म की ओर ले जाने में सहभागी होती है।

3. यहाँ पर हम केवल चित्रकला के शिक्षण के सम्बन्ध में ही कुछ चर्चा करेंगे और अपना अनुभव देगे।

पाठ्यक्रम पें चित्रकला का स्थान तथा उसकी आवश्यकता—

(अ) बच्चों में सृजनात्मक जागृत कर उनको अन्य विषयों के पाठन में सहायता देती है।

(ब) युवा अवस्था में प्रवेश करने पर कुमार्ग से सुमार्ग की ओर उनकी शक्तियों को मोड़कर सुन्दर चरित्र निर्माण करती है।

(स) रचनात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न करती है।

(द) वस्तुओं को सजाकर उपयोगी बनाती है।

(द) बच्चों में स्वावलम्बन की प्रवृत्ति उत्पन्न करती है।

(र) जीवन को श्रेष्ठ, सुन्दर एवं उपयोगी बनाती है।

4. बालकों में चित्रकला के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु मेरे अनुभव–

(क) सजी हुई वस्तुओं को दिखाकर बालकों में कला सीखने की प्रवृत्ति जागृत करना।

(ख) विभिन्न प्रकार के चित्रों का अवलोकन कराना।

(ग) पेपर कटिंग कराना तथा उनसे सजाने की वस्तुयें बनाना।

(घ) वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सुव्यवस्थित कर बालकों को दिखाना।

(ङ) उत्सव के समय बच्चों के द्वारा विद्यालय आदि सजवाना।

(च) लकड़ी का बुरादा, मिट्टी के रंग, गन्ने की खोई, मूंगफली के छिलके आदि बेकार लगने वाली वस्तुओं को प्रयोग में लाकर सुन्दर अलंकृत वस्तुयें बनवाना।

(छ) विभिन्न रंगों का प्रयोग कर बालकों में आलेखन के प्रति नव विचार जागृत करना।

(ज) इस प्रकार चित्रकला एवं शिल्पकला में रुचि पैदा कर स्वावलम्बन हेतु प्रोत्साहित करना।

(झ) अध्यापक को स्वयं विषय में दक्ष होकर बच्चों को अपनी प्रतिभा से प्रभावित कर एक कलाकार बनने की प्रेरणा देना।

(ञ) बच्चों के चित्रों में उचित संशोधन कर उनकी रुचिवर्धन करना।

(ट) नई से नई कलात्मक चीजों को भी दिखाने का प्रयास करना। जैसे प्रदर्शनी आदि।

5. **निष्कर्ष** :—बहुधा देखने में आया है कि कला विषय को विद्यालयों में उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है और कला अध्यापक भी छात्रों को मात्र खाना-पूरी कर कार्य कराकर अपना दायित्व पूरा कर देते हैं। मेरे विचार से उन्हें बच्चों के विकास के लिये चित्रकला विषय सीखने पर स्पष्ट बल देना चाहिये। इसी संदर्भ में कला अध्यापकों को निम्न तथ्यों का भी उचित ज्ञान रखना चाहिये :—

(अ) **संदर्भ चित्र** :—यथार्थ चित्रण की कला के कुछ मूल सिद्धान्त।

(ब) सामूहिक वस्तुओं के चित्रण में अनुपात का ध्यान।

(स) रंगों का भली प्रकार प्रयोग।

(द) छाया प्रकाश तथा परछाई का ज्ञान।

(य) कला में प्रयोग होने वाली वस्तुयं जैसे पेंसिल, परकार, रबर, पैमाना, ब्रुश रंग तथा अन्य यंत्रों का प्रयोग एवं रखरखाव का ध्यान तथा ज्ञान।

अन्त में मेरा यह मत है कि अन्य विषयों की भांति ही चित्रकला के पाठन में भी उचित बल दिया जाना चाहिये। क्योंकि यह विषय सभी विषयों के अध्ययन करने में सहायता प्रदान करता है और बालकों को एक योग्य रचनात्मक नागरिक बनने में विशेष सहायता करता है।

वीरेन्द्र प्रसाद त्रिगुणायत
अव० प्रा०
(प्रवक्ता चित्रकला)
एस. आर. एम. इंटर कालेज
बीसलपुर-पीलीभीत

सेवारत–प्रशिक्षण वर्ष 1992-93

प्राथमिक स्तरीय मृतकाश्रित सेवारत प्रशिक्षण के अध्यापकों की सूची

दिनांक 22-11-92 से 1-12-92 तक

क्र. सं.	नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
1—	श्री अनिल कुमार मिश्रा	प्रा. पा. गुलड़िया बिथरा	अमरिया
2—	,, गजेन्द्र पाल सिंह	,, भौरों खुर्द	पूरनपुर
3—	श्रीमती मीना पाण्डेय	,, घनकुन	अमरिया
4—	श्री शिव किशोर रस्तोगी	,, ढकिया हुलासी	अमरिया
5—	,, अशोक कुमार कटियार	,, गंभिया सहराई	पूरनपुर
6—	,, अवनीश कुमार	,, बूंदीमूड	पूरनपुर
7—	,, हरी ओम	,, रामनगरा	पूरनपुर
8—	,, सन्तोष कुमार	,, दौलतपुर	बरखेड़ा
9—	,, पारस मणि	,, इक्धरा	मरौरी
10—	,, विजय कुमार आर्य	,, मुडंला कला	मरौरी
11—	,, राम रतन लाल	,, आमौर	बरखेड़ा
12—	,, वेद प्रकाश	,, दिवरनिया	अमरिया
13—	,, सत्रीश कुमार	,, बर्रामऊ	बरखेड़ा
14—	,, श्यामा चरन	,, नवादा महेश	बरखेड़ा
15—	,, धीरेन्द्र कुमार	,, रामपुर अमृत	बरखेड़ा
16—	,, राजीव कुमार	,, सखौला	अमरिया
17—	,, हरीश कुमार	,, भीकमपुर	बरखेड़ा
18—	,, सत्य पाल	,, लाह	पूरनपुर
19—	,, उमेश कुमार	,, घुंघचईया	बिलसण्डा
20—	,, राम पाल	,, सिद्धनगर	पूरनपुर पूर्वी
21—	,, जगदीश प्रसाद	,, बेहटी	बिलसण्डा
22—	,, दया शंकर	,, हीरापुरदुही	बीसलपुर
23—	,, हरि पाल सिंह	,, मुसरहा	बरखेड़ा
24—	,, मुहम्मद यामीन	,, गौटिया लखनऊ	बरखेड़ा

क्र. सं.	नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
25—	,, अशोक कुमार	प्रा. पा. मुडिया हुलास	बरखेडा
26—	,, मुहम्मद अयाज	,, फूटाकुआ कुरैया	बरखेड़ा
27—	,, खेमकरन लाल	,, भगवन्ताकरोड	बीसलपुर
28—	,, नरेन्द्र सिंह	,, भोपतपुर	बरखेड़ा
29—	,, प्रभात कुमार	,, हुसैनापुर	पूरनपुर
30—	,, महेन्द्र कुमार	,, पटनियां	बीसलपुर
31—	,, राज कुमार	,, इमलियागंगी	बिलसण्डा
32—	, रामाधार	,, ककरौला	पूरनपुर प०
33—	,, प्रमोद कुमार	,, नवदियाधनेरा	पूरनपुर
34—	,, कु० कल्पना मिश्रा	,, जतीपुर	ललौरी खेड़ा
35—	,, दिलीप कुमार	,, खाजुआदीन नगर	मरौरी
36—	,, अशेष कुमार	,, अभयपुर-माधोपुर	पूरनपुर
37—	,, राजेन्द्र कुमार	,, बौढा	पूरनपुर
38—	,, ऋषि पाल सिंह	,, मटेना	अमरिया
39—	,, सुरेन्द्र कुमार	,, भरतपुर	पूरनपुर पू०
40—	,, हरी राम	,, बख्तावर	पूरनपुर पू०
41—	,, नगेन्द्र पाल मौर्य	,, कबीरगंज	पूरनपुर पू०
42—	,, उमा चरन	,, लुहिचा	बीसलपुर
43—	,, महेश कुमार	,, लोधीपुर	पूरनपुर
44—	,, देवेन्द्र सरन	,, हाफिजनगर बन्नहाई	बीसलपुर
45—	,, प्रेम गिरी	,, ताजपुर	बिलसण्डा

कार्यालय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर–पीलीभीत ।

दिनांक 27-1-93 से 5-2-93 तक नव नियुक्त सहायक अध्यापकों के प्रशिक्षण का विवरण

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम	विकास खण्ड
1	—श्री हरिओम अवस्थी	प्रा० पा० विलासपुर	अमरिया
2	—,, उत्तम सिंह	,, गुजरानपुर	बीसलपुर
3	—,, हरिपाल	,, मीरपुर	बिलसन्डा
4	—,, सोहन लाल	,, बिलासपुर	अमरिया
5	—., बृजेश कुमार	,, नगरारत्ती	बिलसन्डा
6	,, बांके लाल	,, विलासपुर	अमरिया
7	—,, राम सतीश बाजपेई	,, अज्ञारी	बरखेड़ा
8	—,, राम कृपाल	,, जोशी कालौनी	अमरिया
9	—,, भोजराज	,, नौगमा संतोष	बिलसन्डा
10	—,, उग्रसेन	,, ईटगांव	बिलसन्डा
11	—,, राम दास	,, बिलसन्डा	बिलसन्डा
12	—,, नेतराम	,, भूडासरैदा	मरौरी
13	—,, टीका राम	,, अमराकरोड़	बीसलपुर
14	—,, प्रेमराज	,, रिछौला घासी	बीसलपुर
15	—,, अशोक कुमार	,, कोन	पूरनपुर
16	—,, ओम प्रकाश	,, सैदुल्लागंज	मरौरी
17	—,, जगपाल सिंह	,, बरसिया	बीसलपुर
18	—, भगवान दास I	,, वीरसिंहपुर	बिलसन्डा
19	—,, भगवान दास II	,, खाड़ेपुर	बीसलपुर

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम	विकास खण्ड
20	—श्री शंकर लाल	प्रा० पा० रम्पुरिया	मरौरी
21	—,, बल राम	,, खकूमा	बीसलपुर
22	—,, टीका सिंह	,, परेवा अनूप	बरखेड़ा
23	—,, सुख लाल गंगवार	,, तुमड़िया	अमरिया
24	—,, मुरली धर	,, चका	अमरिया
25	—,, कृष्ण विहारी	,, मोहन पुर	मरौरी
26	—,, हरीशबाबू	,, मूसेपुर जैसिंह	बरखेड़ा
27	—,, गिरीश चन्द्र शर्मा	,, नवादादास	अमरिया
28	—,, सतीश चन्द्र	,, रायपुर	बीसलपुर
29	—,, राधे श्याम	,, पिपरिया	पूरनपुर
30	—,, ओमकार नाथ	,, बरामझलिया	अमरिया
31	—,, हीरेन्द्र देव	,, सुन्दरपुर	ललौरी खेड़ा
32	—,, जगदीश सरन	,, चुर्रा सकतपुर	बीसलपुर
32	—,, शिव ओम	,, सोराहा	बीसलपुर
34	—,, राजेन्द्र प्रसाद	,, मझलिया	अमरिया
35	—,, ओम प्रकाश	,, पहाड़ गंज	बीसलपुर
36	—,, अमान उल्लाह	,, नगरिया सैंहगवां	अमरिया
37	—,, श्यामा चरन	,, मकरन्दपुर	ललौरी खेड़ा
38	—,, लेखराज	,, गोपाल नगर	अमरिया
39	—,, राम पाल	,, खुंडारा	ललौरी खेड़ा
40	—,, दुर्गाचरन	,, फुलैया	अमरिया
41	—,, मुबारक अहमद	,, विठौरा खुर्द	मरौरी
42	—,, कुवर सेन	,, सिधार पुर	बिलसन्डा
43	—,, विजयपाल सिंह	,, टोडर पुर	अमरिया
44	—,, रामेश्वर दयाल	,, नौगवां नगला	बरखेड़ा
45	—,, बाबू राम	,, बरी मरौरी	न्यूरिया
46	—,, राम भरोसे लाल	,, हाशिम पुर	अमरिया
47	—,, सुदेव सुमन	,, ,,	,,

क्र०सं०	अध्यापक का नाम		विद्यालय का नाम	विकास खण्ड
48—	श्री द्वारिका प्रसाद	प्रा० पा०	निजाम डाडी	ललौरी खेड़ा
49—	श्रीमती मीरा देवी	,,	अमरा करोड	बीसलपुर
50—	,, मन्जू लता शर्मा	,,	मझिगवां	बीसलपुर
51—	कु० मीरा देवी	,,	जसौली	बीसलपुर
52—	श्रीमती रेखा रानी गिहार	,,	न्यरिया	मरौरी
53—	,, नत्थो देवी	,,	कटैइया पौनिया	बिलसन्डा
54—	कु० शशि वाला	,,	बिलसन्डा	बिलसन्डा
55—	,, रानी देवी	,,	पगार	बिलसन्डा
56—	श्रीमती आदर्श कु० मिश्रा	,,	बिलसन्डा	बिलसन्डा
57—	,, कमला देवी	,,	सिमरिया ताराचन्द	बिलसन्डा
58—	,, उर्मिला देवी	,,	शेरगंज	बरखेदा
59—	,, शकुन्तला देवी सैनी	,,	मोहनपुर	मरौरी
60—	,, राम बेटी	,,	चठिया सेवाराम	बीसलपुर
61—	,, रेहाना बी	,,	रायपुर	ललौरी खेड़ा
62—	,, कमला देवी	,,	रायपुर अमृत	बिलसन्डा
63—	,, गीता रानी	,,	पतरसिया	बरखेड़ा
64—	,, मनोरमा देवी	,,	टाहपौटा	मरौरी
65—	,, शोभा रानी	,,	दियूरी	मरौरी
66—	,, मनोरमा देवी	,,	कार्यमुक्त	27-1-93 की पूर्वान्ह
67—	,, नीलम देवी	,,	भमौरा	मरौरी
68—	,, निर्मल कुमारी	,,	भमौरा	मरौरी
69—	,, सावित्री देवी	,,	शाही	ललौरी खेड़ा
70—	,, सरोजनी गुप्ता	,,	जनीपुर	ललौरी खेड़ा
71—	,, कमला चरन	,,	औरया	मरौरी
72—	,, कमलेश कुमारी	,,	औरया	मरौरी
73—	,, योगेश्वरी देवी	,,	न्यूरिया कालौनी	मरौरी
74—	,, हुमेरा बानो	,,	सरदार नगर	अमरिया

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम	विकास खण्ड
75—	श्रीमती यास्मीन अख्तर	प्रा० पा० टाहपौटा	मरौरी
76—	,, लक्ष्मी देवी कटियार	,, भडरिया	मरौरी
77—	,, मीरा मिश्रा	,, गजरौला	मरौरी
78—	,, शशि तिवारी	,, पिपरिया	मरौरी
79—	,, विद्यावती	,, गजरौला कला	मरौरी
80—	,, कुमुद लता	,, भूंडा सरैदा	मरौरी
81—	,, लक्ष्मी देवी शर्मा	,, अटकौना	मरौरी
82—	श्री बेनी राम	,, महचन्दी	अमरिया
83—	,, नन्द राम	,, महचन्दी	अमरिया
84—	,, प्रेम बहादुर	,, उझैनिया	ललौरी खेड़ा

कार्यालय–जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर-पीलीभीत

दिनांक 10-3-93 से 19-3-93 तक नव नियुक्त स० अ० का अभिनवीकरण प्रशिक्षण

क्र० सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास-क्षेत्र
1	श्री राम सनेही	प्रा० वि० पंडरी मरौरी	बिलसन्डा
2	श्री ओम प्रकाश	,, मीरपुर-हीरपुर	,,
3	श्री पोथी राम	,, ,,	,,
4	श्री अशोक कुमार	,, रामपुर वसन्त	,,
5	श्री जगदीश प्रसाद	,, लिलहर	बिलसन्डा-1
6	श्री महेन्द्र पाल	,, नदहा रम्पुरा कोन	पूरनपुर-पूर्वी
7	श्री कृष्ण	,, बैरा	बीसलपुर
8	श्री वीरेन्द्र नाथ	,, मोहम्मदपुर पिपरिया	पूरनपुर
9	श्री मेवा राम	,, लाड़पुर	बीसलपुर
10	श्री प्रेम नरायण	,, पडरी खमरिया	बरखेड़ा
11	श्री गंगा राम	,, मिन्तनपुर	,,
12	श्री राम औतार	,, आमड़डा	,,
13	श्री राम चन्द्र लाल	,, मूसेपुर	,,
14	श्री पोथी राम	,, मुडलिया गौलू	अमरिया
15	श्री राधाकृष्ण गंगवार	,, अर्जुनपुर	बीसलपुर
16	श्री राजेश कुमार सक्सेना	,, ,,	,,
17	श्री सीताराम रस्तोगी	,, भसूडा	,,
18	श्री कृष्ण औतार	,, रांठ	बिलसण्डा नं० 1
19	श्रीमती पुष्प लता	,, कुरैया कला	बिलसन्डा
20	श्रीमती बीना सक्सेना	,, अहिरपुरा	बीसलपुर
21	श्रीमती कमलेश शर्मा	,, अमृता खास	,,
22	श्रीमती शकुन्तला देवी	,, चठिया	,,
23	श्रीमती अनीता कुमारी	,, खमरिया पट्टी	पूरनपुर

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
24	श्रीमती शान्ती देवी	प्रा० वि० भोगापुर	बीसलपुर
25	श्री हरिशंकर वर्मा	,, अजीतपुर	मरौरी
26	श्री नकहत फैजानी	,, कितनापुर	बीसलपुर
27	श्री भद्रशील मिश्रा	,, बरखेड़ा	बरखेड़ा नं० 1
28	श्री आफताव हुसैन	,, सुजनी	बीसलपुर
29	श्री हरी राम	,, वरुतापुर	पूरनपुर-पूर्वी
30	श्री श्रीचन्द्र मिश्रा	,, लुकटिहाई	पूरनपुर
31	श्री विद्याराम	,, नवादा दास	अमरिया

मूल्यांकन प्रपत्र

दस दिवसीय सेवारत (प्राथमिक स्तरीय) मृतक आश्रित अप्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं का प्रशिक्षण शिविर

1—दस दिवसीय प्रशिक्षण आपको कैसा लगा ?

रुचिकर	कम रुचिकर	अधिक रुचिकर
24	×	20

2—आपने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है उससे आप कितना सन्तुष्ट हैं ?

कम	अधिक	बहुत अधिक
2	29	13

3—प्रशिक्षण में चर्चित विषयों से क्या आप सन्तुष्ट हैं। यदि नहीं तो किस बिषय की चर्चा चाहते हैं ?

सन्तुष्ट हैं	बिल्कुल नहीं
16	10

4—क्या प्रशिक्षण में प्राथमिक स्तरीय सभी विषयों पर चर्चा हुई है ?

हाँ	नहीं
32	12

5—प्रशिक्षण में विभिन्न विषयों के प्रभावी प्रशिक्षण हेतु शिक्षण में सामग्रियों, उपकरणों, किटों के प्रयोग से छात्र लाभान्वित होंगे और शिक्षा के स्तर में सुधार होगा।

हाँ	नहीं
44	×

6—विभिन्न विषयों की विषय वस्तु व शिक्षण विधियों की जो जानकारी दी गई उससे आप किस सीमा तक सन्तुष्ट हैं ?

कम	अधिक	बहुत अधिक
2	26	16

7—क्या आप इसी प्रकार के शिक्षण हेतु शिक्षण सामग्रियों, उपकरणों, किटों, स्थानीय परिवेश से प्राप्त सहायक सामग्री का प्रयोग कर सकेंगे।

हाँ	नहीं
42	2

8—विज्ञान एवं गणित शिक्षण में किटों के प्रयोग से आप कहाँ तक सन्तुष्ट हैं ?

बहुत कम	सामान्य	बहुत अधिक
×	15	29

9—विज्ञान एवं गणित विषयों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव दीजिये ।

(क) विज्ञान एवं गणित में यन्त्रों और किटों का प्राथमिक स्तर पर प्रयोग ।

(ख) फिल्म, मॉडल एवं स्लाइड द्वारा शिक्षण ।

(ग) दोनों ही विषयों में प्रयोग प्रदर्शन पद्धति पर बल ।

(घ) नई शिक्षा पद्धति के अनुसार सहायक सामग्रियों का प्रयोग ।

10—आपको विभिन्न विषयों में सबसे अधिक रुचिकर कौन सा विषय लगा ।

शिक्षा मनोविज्ञान	हिन्दी	गणित	विज्ञान
14 (व्यक्तियों ने)	4 (व्यक्तियों ने)	12 (व्यक्तियों ने)	13 (व्यक्तियों ने)

11— प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव—

(क) कक्षा में जाकर विभिन्न विषयों का आदर्श पाठ कराया जाय ।

(ख) प्रतिभागियों से शिक्षण कार्य संस्थान में कराया जाय ।

(ग) प्रशिक्षकों की संख्या, विषय एवं प्रशिक्षण अवधि में वृद्धि की जाय ।

(घ) सभी विषयों में सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाये ।

(ङ) बच्चों को खेलने का अवसर दिया जाये एवं अभ्यास कराया जाय ।

(च) विशेष रूप से प्रशिक्षण की अवधि बढ़ायी जावे ।

(छ) प्रशिक्षण अधिकारी अपने समय का विशेष ध्यान रखे ।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-7760
Date 20-09-93

मूल्यांकन

दस दिवसीय नवनियुक्त स० अ० (प्राथमिक स्तरीय) का प्रशिक्षण

1—दस दिवसीय प्रशिक्षण आपको कैसा लगा ?

रुचिकर	कम रुचिकर	अधिक रुचिकर
45	05	64

2—आपने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है उससे आप कितना सन्तुष्ट हैं ?

कम	अधिक	बहुत अधिक
×	45	32

3—क्या प्रशिक्षण में सभी विषयों की चर्चा की गयी ?

हाँ	नहीं
100	14

4—प्रशिक्षण में सभी विषयों की जो चर्चा हुई उससे आप किस सीमा तक संतुष्ट हैं ?

संतुष्ट हैं	संतुष्ट नहीं
84	27

5—विभिन्न विषयों की विषय वस्तु व शिक्षण विधियों की जो जानकारी दी गयी उससे आप किस सीमा तक संतुष्ट हैं ?

कम	अधिक	बहुत अधिक
16	63	32

6—प्रशिक्षण में विभिन्न विषयों के प्रभावी शिक्षण हेतु जिन शिक्षण सामग्रियों, उपकरणों, किटों के प्रयोग किए क्या इससे शिक्षण स्तर में सुधार होगा ?

हां	नहीं
113	02

7—क्या आप अपने विद्यालयों में इसी प्रकार शिक्षण सामग्रियों, किटों आदि का प्रयोग भली प्रकार कर सकेंगे ?

हां	नहीं
113	02

8—विज्ञान एवं गणित की किटों के प्रयोग से आप किस सीमा तक सन्तुष्ट हैं ?

कम	अधिक	बहुत अधिक	सामान्य रूप से
×	24	28	62

9—विभिन्न विषयों में आपको कौन से विषय का प्रशिक्षण अधिक रोचक लगा ?

विज्ञान	गणित	हिन्दी	सभी विषयों के प्रति
34	33	33	15

10—प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु संक्षेप में अपने सुझाव दीजिए—

1- विज्ञान/गणित की किटों के माध्यम से इन विषयों का अधिक से अधिक प्रशिक्षण दिया जाये ।

2- सहायक सामग्री के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाये तथा प्रशिक्षणार्थियों को भी उनके प्रयोग का अवसर दिया जाये

3- समय समय पर नियमित रूप से प्रशिक्षण आयोजित किये जायें ।

4- प्रशिक्षण में संगति, व्यायाम एवं खेलों को और अधिक समय दिया जाये ।

विज्ञान/गणित प्रशिक्षण

शिक्षा में विज्ञान एवं गणित विषयों का महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इनसे सम्बन्धित अनुभवों की आवश्यकता पड़ती है। आज जीवन इतना जटिल हो गया है कि बिना विज्ञान के सुख से नहीं रह सकते विभिन्न देश विज्ञान की उन्नति के कारण ही प्रगतिशील देशों की श्रेणी में आते हैं। जीवन में समृद्धि के लिये इसका ज्ञान आवश्यक है इसीलिये प्राथमिक स्तर से ही विज्ञान की शिक्षा छात्रों को दी जाती है। जिससे कि उसमें सोचने विचारने तार्किक ढंग से ही सुनियोजित एवं उसका क्रियाशीलता खोजपूर्ण हो। एक समय था जब विज्ञान की कम प्रगति के कारण मनुष्य अनेक रूढ़िवादी विचारों से जकड़ा हुआ था कष्ट उठाता और अपने को असहाय मानता था। आज विज्ञान की शिक्षा के द्वारा उसने विभिन्न घटनाओं के पीछे छिपे रहस्यों, तथ्यों को खोज लिया और अपने को इन रूढ़िवादिताओं से मुक्त किया है। कष्टों का निवारण किया है असहाय को सहाय बनाया।

प्रारम्भ से ही छात्रों में तार्किक ढंग से सोचने विचारने, किसी भी तथ्य को बगैर कसौटी पर कसे न मानने जैसी विवेकपूर्ण योग्यतायें विज्ञान का ही परिचायक है। इसलिये विज्ञान शिक्षण आवश्यक है। प्राथमिक स्तरों पर विद्यालय में शिक्षक विषयों के अनुसार नहीं बल्कि छात्रों की संख्या के आधार पर रखे जाते हैं। प्रत्येक शिक्षक को विज्ञान, गणित, भाषा तथा सामाजिक अध्ययन कला आदि विभिन्न विषय पढ़ाना पड़ते हैं। अधिकांश शिक्षक जिन्होंने विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है विज्ञान पढ़ाना पड़ता है। अतः इन अध्यापकों की विज्ञान से सम्बन्धित जानकारी के लिये आवश्यक है कि इनके लिये विज्ञान प्रशिक्षण आयोजित किये जायें। विज्ञान शिक्षण बिना सहायक सामग्री के अपूर्ण है। अतः अध्यापकों को विज्ञान किट के प्रयोग तथा विभिन्न उपकरणों का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रशिक्षण के द्वारा इन समस्याओं व आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। दूसरे विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित कक्षा समस्याओं का निदान भी इस अवसर पर हो जाता है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षण हेतु नवीन विज्ञान किटों का निर्माण हुआ है जिनके माध्यम से प्राथमिक स्तर पर

विज्ञान शिक्षण दिया जाना प्रस्तावित है। अतः इनके प्रयोग के लिये आवश्यक है कि शिक्षकों को इसकी पूरी जानकारी हो। यहाँ पर अध्यापक प्रयोगिक तौर पर सीखते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास पैदा होता है और कक्षा में पूरे आत्म-विश्वास के साथ उनका प्रयोग कर सकते हैं।

गणित विषय नीरस माना जाता है छात्रों की इस में रुचि कम होती है कारण है बच्चों में क्रियाशीलता होती है। वह खामोश रह कर देर तक नहीं बैठ सकते हैं। उन्हें कुछ न कुछ क्रियात्मक कार्य देकर तथा गणित किटों तथा अन्य सहायक सामग्री का प्रयोग करके यह समस्या काफी हद तक दूर हुई है। गणित विषय को रोचकता प्रदान की गई है। विज्ञान की तरह से गणित किटों का भी प्रयोग होने लगा है। अध्यापकों का इनका प्रयोग कैसे करें इन प्रशिक्षणों में भली प्रकार दिया जाता है तथा कक्षा सम्बन्धी समस्याओं के समाधान भी प्राप्त होते हैं।

गणित/विज्ञान का प्रशिक्षण इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अलग से आयोजित किये गये क्योंकि इनमें अध्यापकों को इन विषयों की चर्चा का अधिक समय मिलता है उनकी जिज्ञासाओं का समाधान हो जाता है। अन्य विषयों के साथ प्रशिक्षण देने में इन विषयों को पर्याप्त समय नहीं मिलता है।

उबैदुर रहमान
सहायक अध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बीसलपुर-पीलीभीत।

अम्ल, लवण व क्षार

लवण

लवण :—अम्ल तथा क्षार आपस में क्रिया कर पानी के अतिरिक्त जो पदार्थ बनाते हैं उन्हें लवण कहा जाता है। जैसे—

$$NaOH + HCl \rightarrow \underset{\text{लवण}}{NaCl} + H_2O$$

$$2KOH + H_2SO_4 \rightarrow \underset{\text{लवण}}{K_2SO_4} + 2H_2O$$

लवणों के प्रकार :—लवण निम्न प्रकार के होते हैं।

1- सामान्य लवण
2- अम्लीय लवण
3- क्षारीय लवण
4- द्विक लवण
5- संकर लवण
6- मिश्रित लवण

1. **सामान्य लवण** :—वे लवण जो अम्ल के अणु में उपस्थित समस्त विस्थापनीय हाइड्रोजन परमाणुओं को धात्विक परमाणुओं या मूलकों द्वारा विस्थापित करने पर बनते हैं सामान्य लवण कहे जाते हैं। जैसे-$NaCl$, K_2SO_4, KNO_3 इनका जलीय विलयन अम्लीय क्षारीय या उदासीन कैसा भी हो सकता है।

2. **अम्लीय लवण** :—वे लवण, जो किसी अम्ल के अणु में उपस्थित विस्थापनीय हाइड्रोजन परमाणुओं के आंशिक विस्थापन द्वारा बनते हैं। अम्लीय लवण कहें जाते हैं। जैसे-$NaHSO_4$, $NaHCO_3$, Na_2HPO_4 यह पानी में घोले जाते पर H^+ उत्पन्न करते हैं। अतः इनका जलीय विलयन अम्लीय होता है।

3. **क्षारीय लवण** :—वे लवण जो किसी क्षार के अणु से (OH^-) मूलकों के आंशिक विस्थापन से बनते हैं। क्षारीय लवण कहे जाते हैं। जैसे—

$Zn(OH)Cl$, $Pb(OH)No_3$, यह पानी में घोले जाते पर OH^- मूलक उत्पन्न करते हैं। अत: इनके जलीय विलयन क्षारीय होते हैं।

4. **द्विक या दोहरे लवण** :—वे लवण, जो दो सामान्य लवणों की समान अणु मात्राओं में मिलाने से बनते हैं, द्विक लवण कहलाते हैं। जैसे—फैरस अमोनियम सल्फेट $K_2SO_4Al_2(SO_4)_3 24H_2O$

संकर लवण :—वे लवण जो विलयन में एक धन आयन तथा एक जटिल रचना वाला ऋण आयन देते हैं, संकर लवण कहे जाते हैं। जैसे—

$$K_4[Fe(CN)_6] \rightarrow \underset{\text{धन आयन}}{4K^+} + \underset{\text{जटिल ऋण आयन}}{Fe(CN)_6^{----}}$$

$$K_3Fe(CN)_6 \rightarrow \underset{}{3K^+} + \underset{\text{जटिल ऋण आयन}}{Fe(CN)_6^{---}}$$

मिश्रित लवण : वे लवण जिनमें एक से अधिक अम्लीय या क्षारीय मूलक होते हैं, मिश्रित लवण कहे जाते हैं। जैसे–$NaKSO_4$, $Ca(OCl)Cl$

क्षार

क्षार :—वे पदार्थ जो चखने में कड़वे स्वाद वाले तथा छूने में चिकने होते हैं, क्षार कहे जाते हैं। प्रकृति में पाई जाने वाली रेत मिट्टी तथा सज्जी मिट्टी में क्षार ही होते हैं।

प्रयोगशाला तथा अन्य वैज्ञानिक कार्यों में प्राय: निम्न क्षारों का प्रयोग किया जाता है।

1- कास्टिक सोडा या सोडियम हाइड्राक्साइड ($NaOH$)

2- कास्टिक पोटाश या पोटेशियम हाइड्राक्साइड (KOH)

3- चूना या कैल्शियम आक्साइड (CaO)

4- कैल्शियम हाइड्राक्हाइड $Ca(OH)_2$

5- अमोनियम हाइड्राक्साइड NH_4OH

क्षारों के प्रमुख गुण

1- सभी क्षार स्वाद में कड़वे होते हैं।

2- सभी क्षार छूने में चिकने होते हैं।

3- सभी क्षार लाल लिटमस को नीला कर देते हैं।

4- क्षार, अम्लों के साथ क्रिया कर लवण तथा जल बनाते हैं।

5- क्षार, जलीय विलयनों में OH^- उत्पन्न करते हैं।

क्षार की अम्लीयता :—किसी क्षार की अम्लीयता उसके एक अणु में उपस्थित हाइड्राक्सिल मूलकों (OH^-) की संख्या के बराबर होती हैं।

अथवा

किसी क्षार की अम्लीयता उसके एक अणु द्वारा जल में आयनित होकर उत्पन्न किये जाने वाले हाइड्राक्सिल आयनों (OH^-) की संख्या के बराबर होती है।

जैसे, NaOH की अम्लीयता = 1

$$KOH \rightarrow \overset{+}{K} + \overset{-}{OH}$$

$Ca(OH)_2$ की अम्लीयता = 2

$Al(OH)_3$ की अम्लीयता = 2

आक्साइड :—किसी तत्व द्वारा आक्सीजन के साथ संयोग करके बनाये गये यौगिकों को उस तत्व का आक्साइड कहा जाता है। जैसे, CO_2, SO_2 NO, NO_2, P_2S_5, ZnO, Al_2O_3, Na_2O, MgO, H_2O, CO, BaO_2, H_2O_2

आक्साइड के प्रकार

आक्साइडों को इनके व्यवहार के आधार पर पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1—अम्लीय आक्साइड

2—क्षारीय आक्साइड

3—उदासीन आक्साइड

4—उभयधर्मी आक्साइड

5—पर-आक्साइड

अम्लीय आक्साइड :—वे आक्साइड जो पानी में घोले जाने पर अम्ल बनाते हैं, अम्लीय आक्साइड कहे जाते हैं। इस वर्ग में अधातुओं के आक्साइड आते हैं। जैसे, CO_2, SO_2 P_2O_5 NO आदि।

क्षारीय आक्साइड :—वे आक्साइड जो पानी में घोले जाने पर क्षार बनाते हैं क्षारीय आक्साइड कहे जाते हैं। जैसे, N_2O, CaO, BaO, MgO

उदासीन आक्साइड :—वे आक्साइड जो पानी में घोले जाने पर न तो अम्ल बनाते हैं और न ही क्षार, उदासीन कहे जाते हैं। जैसे, H_2O, CO

उभयधर्मी आक्साइड :—इस वर्ग में वे आक्साइड आते हैं जो अम्ल तथा क्षार दोनों के ही गुण प्रदर्शित करते हैं, जैसे– ZnO Al_2O_3 आदि।

पर आक्साइड :—वे आक्साइड जिनमें आक्सीजन की मात्रा साधारण आक्साइडों से अधिक होती है, पर आक्साइड कहे जाते हैं। जैसे, H_2O_2, BaO_2, Na_2O_2 आदि।

अम्ल

अम्ल :—वे पदार्थ जो चखने में खट्टे स्वाद वाले होते हैं तथा नीले लिटमस को लाल कर देते हैं। अम्ल कहे जाते हैं। नीबू, संतरा, इमली आदि की खट्टी प्रकृति अम्लों के कारण होती है।

प्रयोगशाला तथा अन्य वैज्ञानिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख अम्ल निम्न हैं :—

1— नमक का अम्ल या हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (HCl)

2— गंधक का अम्ल या सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2So_4)

3— शोरे का अम्ल या नाइट्रिक अम्ल (HNO_3)

4— सिरके का अम्ल या ऐसिटिक अम्ल (CH_3COOH)

अम्ल के सामान्य गुण :—वे गुण जो अम्लों की श्रेणी में आने वाले प्रत्येक पदार्थ में पाये जाते हैं। सामान्य गुण कहे जाते हैं।

अम्लों के सामान्य गुण निम्न हैं :—वे गुण जो अम्लों की श्रेणी में आने वाले प्रत्येक पदार्थ में पाये जाते हैं। सामान्य गुण कहे जाते हैं। अम्लों के सामान्य गुण निम्न हैं।

1— अम्लों का स्वाद खट्टा होता है।

2— नीले लिटमस को लाल कर देते हैं।

3— अम्ल संक्षारक होते हैं।

4— कुछ धातुओं से क्रिया करके अम्ल H_2 गैस देते हैं।

5— अम्ल क्षारों से क्रिया लवण पानी बनाते हैं।

6— अम्ल कार्बोनेट से क्रिया कर लवण एवं CO_2 बनाते हैं।

7— अम्ल जल में घोलने पर H^+ देते हैं।

अम्ल की भास्मिकता :—किसी अम्ल के एक अणु में उपस्थित विस्थापनीय H परमाणुओं की संख्या को अम्ल की भास्मिकता कहा जाता हैं।

अथवा

किसी अम्ल के एक अणु द्वारा जल में आयनित होने पर उत्पन्न किये जाने वाले H^+ की संख्या को अम्ल की भास्मिकता कहा जाता है।

जैसे,

HCl की भास्मिकता = 1

HNO_3 की भास्मिकता = 1

H_2SO_4 की भास्मिकता = 2

CH_3COOH की भास्मिकता = 1

H_3PO_4 की भास्मिकता = 3

H_2CO_3 की भास्मिकता = 2

प्रस्तुति—

हरिलाल गंगवार

प्रवक्ता रसायन विज्ञान

स० ब० भाई पटेल इण्टर कालेज

अमृता खास (पीलीभीत)

सेवारत–प्रशिक्षण वर्ष 1992-93

प्राथमिक विद्यालयों के विज्ञान/गणित पढ़ाने वाले अध्यापकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 9-2-93 से 13-2-93 तक

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
1	—श्री जानकी प्रसाद	प्रा० वि० कितनपुर	बरखेड़ा
2	—,, शोभा राम	,, नवादा महेश	,,
3	—,, प्यारे लाल	,, ,,	,,
4	—,, श्यामचरन	,, ,,	,,
5	—,, डोरी लाल	,, पिपरिया खास	,,
6	—,, खयाली राज वर्मा	,, भीकम पुर	,,
7	—,, नन्हे लाल	,, भीकम पुर	,,
8	—,, पूरन लाल	,, काजर बोझी	,,
9	—,, महेशचन्द्र शर्मा	,, सैजना (मरौरी)	मरौरी
10	—,, होरी लाल	,, खमरिया पुल	ललौरी खेड़ा
11	—,, लक्ष्मी नरायन	,, खरूआ	,,
12	—,, ओम प्रकाश	,, कल्यानपुर	,,
13	—,, नरायन दास	,, वारनबादा	,,
14	—,, नेतराम	,, पंडरी-खमरिया	बरखेड़ा
15	—,, खेमकरन लाल	,, पुरैना	,,
16	—,, श्रीकृष्ण	,, बहादुरपुर-हुक्मी	,,
17	—,, गिरधारी लाल	,, भोपत पुर	,,
18	—, सुख पाल	,, ,,	,,
19	—,, नत्थू लाल	,, वस्थना	,,
20	—,, जानकी प्रसाद	,, मसीत	बरखेड़ा
21	—,, नागेन्द्र कुमार	,, कटकवारा	,,
22	—,, बाबूराम	,, पिपरिया खास	,,
23	—,, बुद्ध सेन	,, सेखा पुर	,,
24	—,, दया राम	,, दौलत पुर	,,

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम		विकास–क्षेत्र
25—	श्री परमानन्द	प्रा० वि०	बर्रामऊ	बरखेड़ा
26—	,, ध्रुव सिंह	,,	सिसैया	मरौरी
27—	,, छोटे लाल	,,	करनपुर	,,
28—	,, राम विलास	,,	कुकरी खेड़ा	,,
29—	,, सुन्दर लाल	,,	,,	,,
30—	,, छोटे लाल	,,	बढ़ैरा	बरखेड़ा
31—	,, दया नन्द	,,	बढ़ैरा	,,
32—	,, सिया राम	,,	परेवा अनूप	,,
33—	,, सुमेर लाल	,,	,,	,,
34—	,, नत्थू लाल	,,	गैनेरी बड़ी	ललौरी खेड़ा
35—	,, राम प्रसाद सागर	,,	कैमदेवी पुरा	मरौरी
36—	,, टोडी लाल	,,	बर्रामऊ	बरखेड़ा
37—	,, मोहन लाल आचार्य	,,	टाहपौटा	मरौरी
38—	,, जगदीश प्रसाद शर्मा	,,	,,	,,
39—	,, बाबू राम	,,	मुड़िया रामकिसन	,,
40—	,, ओम प्रकाश शर्मा	,,	सिरसा सरदहा	,,
41—	,, सुभाष चन्द्र	,,	कैमदेवी पुरा	,,
42—	,, सिया राम	,,	कबूलपुर	बरखेड़ा
43—	,, मेवाराम	,,	,,	,,
44—	,, नरायन लाल	,,	ललौरी खेड़ा	ललौरी खेड़ा
45—	,, बाबू राम	,,	,,	,,
46—	,, महेन्द्र पाल सिंह	,,	कुकरी खेड़ा	,,
47—	,, सैयद सरफराज हुसैन	,,	जहानाबाद	,,
48—	,, गोविन्द राम	,,	भिलैयागांव खेड़ा	मरौरी
49—	,, हेमेन्द्र देब	,,	लालपुर	ललौरी खेड़ा
50—	,, कोमिल प्रसाद	,,	सुन्दरपुर	,,
51—	,, रमाकान्त पाण्डेय	,,	,,	,,
52—	,, ढाकन लाल	,,	वेलाढ़डी	बरखेड़ा

सेवारत–प्रशिक्षण वर्ष 1992–93

उच्च प्राथमिक विद्यालय सेवारत प्रशिक्षण गणित/विज्ञान

दिनांक 15-2-93 से 24-2-93 तक

क्र० सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास-क्षेत्र
1	श्री भगवान दास	उ. प्रा. वि टाहपौटा	मरौरी
2	श्री अरविन्द कुमार	,, खनंका	बीसलपुर
3	श्री धर्मेन्द्र कुमार	,, रसायांखानपुर	,,
4	श्री शिवप्रसाद मिश्रा	,, ,,	,,
5	श्री भूपराम	,, दियोहना	बरखेड़ा
6	श्री चूरामणि	,, दियोरिया कला	बिलसन्डा
7	श्री सुन्दर लाल	,, बस्थना	मरौरी
8	श्री बाबूराम	,, अकवराबाद	बिलसन्डा
9	श्री चिरौजी लाल	,, रामपुर अमृत	,,
10	श्री बृजलाल	,, सिसैया जलालपुर	बीसलपुर
11	श्री श्यामबहादुर सक्सेना	,, बीसलपुर	,,
12	श्री कन्हई लाल	,, अकबराबाद	बिलसन्डा
13	श्री गोविन्द सिंह	,, मोहम्मदपुर भजा	बीसलपुर
14	श्री श्याम बिहारी लाल	,, भदेगंकन्जा	बिलसन्डा
15	श्री चिरैजी लाल	,, जोगीठेर	बरखेड़ा
16	श्री कन्हैया लाल	,, जहानाबाद	ललौरी खेड़ा
17	श्री सुमेर लाल	,, मोहम्मदपुर भजा	बीसलपुर
18	श्री महेन्द्र पाल गंगवार	,, चुरासकतपुर	,,
19	श्री राम बहादुर	,, बढैरा	बरखेड़ा
20	श्री रामचन्द्र लाल	,, परेवा अनूप	,,
21	श्री करूणा शरण	,, अर्जुनपुर	बीसलपुर
22	श्री जागन लाल	रा. आदर्श वि. बीसलपुर	,,
23	श्री महेश चन्द्र	,, ,,	,,

कार्यालय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर–पीलीभीत ।

प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापकों का दिनांक 17-3-93 से से 21-3-93 तक विज्ञान/गणित प्रशिक्षण

क्र. सं.	नाम	विद्यालय का नाम
1—	श्री सुरेश चन्द्र	प्रा० वि० बख्तापुर
2—	,, सुधाकर प्रसाद	,, भैसासुर
3—	,, ललित मोहन	,, इलाहाबाद सिमरा
4—	,, बाबू राम गंगवार	,, नवदिया भगत
5—	,, काली चरन	,, ललौर गुजरानपुर
6—	,, मोहन लाल वर्मा	,, विकासिम पुर
7—	,, लाल बहादुर	,, करोड
8—	श्रीमती स्नेहलता	,, पिपरगहना
9—	श्री मुरारी लाल	,, वरासिया
10—	,, बुद्धसेन गंगवार	,, रसूलपुर पचपुरखा
11—	,, मो. मतीन खां	,, जादोंपुर
12—	,, सुन्दर लाल	,, मटेहना
13—	,, मुरली धर	,, पकडिया मुगली
14—	,, राज पाल	,, चठिया मेवाराम
15—	श्रीमती कमलेश कुमारी	,, बैरा

मूल्यांकन

प्रा० स्तरीय विज्ञान/गणित शिक्षण

1—क्या सर्वधर्म प्रार्थना से आपको लाभ हुआ है, इसमें क्या सुधार अपेक्षित हैं ?

हाँ	या नहीं
हाँ	×

2—विज्ञान किट का प्रशिक्षण आपके अध्यापन हेतु कितना लाभकारी रहा ?

थोड़ा	बहुत	बहुत अधिक
	3	12

3—सजीयव वस्तुऐं व उसके लक्षण वार्ता कितनी सार्थक निरर्थक रही किन सहायक सामग्री का प्रयोग किया गया ?

सार्थक	निरर्थक
11	4

4—दशमलव एवं भिन्न का ज्ञान परस्पर परिवर्तन का शिक्षण कैसा रहा किस सहायक सामग्री का प्रयोग शिक्षण में किया गया ?

सन्तोष जनक	पर्याप्त	अप्रयाप्त
14	1	

5—क्षेत्रफल आयतन सम्बन्धी पाठों का शिक्षण कैसा रहा किस सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया गया ?

सन्तोष जनक	पर्याप्त	अप्रर्याप्त
10	5	

6—संस्थान द्वारा इस प्रशिक्षण में आपको विज्ञान व गणित के कौन-कौन से उपकरण दिखाये गये ?

सभी उपकरण दिखाये गये ।

7—क्या विज्ञान एवं गणित अध्यापक वक्ताओं द्वारा विज्ञान व गणित के पाठों हेतु शिक्षण प्रदर्शन किया गया यदि हाँ तो किस विषय पर ।

चुम्बक का प्रयोग ।

8—इस प्रशिक्षण में आपको किस किस विषय पाठों की वार्ताएं उपयोगी व रुचिकर तथा अनुपयोगी अरुचिकर लगीं।

उपयोगी एवं रुचिकर	अनुपयोगी अरुचिकर
2	×

9—इस प्रशिक्षण में आपके भोजन की व्यवस्था कैसी रही ?

सामान्य

10—संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यवस्था में आप क्या सुधार चाहते हैं ?

उचित प्रशिक्षण हेतु उचित अध्यापकों तथा उचित सफाई की व्यवस्था की जाये।

कार्यानुभव प्रशिक्षण

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले ही यह अनुभव किया जा रहा था कि भारतवर्ष में जो तात्कालिक शिक्षा है वह उपयोगी नहीं है यह बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल नहीं देती है बल्कि मुख्य रूप से मानसिक विकास पर अधिक बल देती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बेसिक शिक्षा पद्धति को लागू किया गया जिसमें शिक्षा को किसी शिल्प पर आधारित किया गया। कोठारी आयोग ने भी (1966) अपनी रिपोर्ट में कार्यानुभव की शिक्षा की संस्तुति की। नयी शिक्षा नीति 1986 में भी पुनः इस कार्यानुभव की महत्ता को स्वीकार किया गया कार्यानुभव को ही समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के रूप में जाना जाता है।

कार्यानुभव :—कार्यानुभव सोद्देश्य और सार्थक शारीरिक कार्य है जिसमें सीखने के साथ-साथ उसका परिणाम किसी सामग्री अथवा समाजोपयोगी सेवा के रूप में प्राप्त होता है।

विद्यालयों में कार्यानुभव की शिक्षा दिये जाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

1—छात्रों में शारीरिक श्रम करने की आदत का विकास।

2—छात्रों में शारीरिक श्रम करने वाले के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करना।

3—छात्रों में मानवीय मूल्यों के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करना।

4—उनमें सेवा भाव का विकास करना।

5—स्वच्छता पूर्वक रहने व कार्य करने की आदत डालना।

6—सामाजिक कार्यों के प्रति चेतना पैदा करना और उनमें रुचि जाग्रत करना।

7—कार्य करते हुए भावी जीवन में व्यवसाय चुनने का अवसर देना।

8—छात्रों को पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय दायित्वों से अवगत करना।

9—वस्तुओं एवं उपकरणों के ठीक प्रकार से प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।

10—सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की भावना जाग्रत करना ।

11—समाजोपयोगी नेतृत्व की भावना विकसित करना ।

12—अपने आस-पास में हो रहे विभिन्न समाजोपयोगी कार्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना ।

13—प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना जाग्रत करना ।

14—विभिन्न कार्यों से सम्बन्धित वैज्ञानिक नियमों, सिद्धान्तों के समझने में सहायता करना ।

आज दिन प्रतिदिन बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है ऐसे में कार्यानुभव का विशेष महत्व है । शिक्षा प्राप्त करने के बाद छात्रों में श्रम के प्रति आदर भाव होना, वह सीखे हुए कार्यों अथवा उनके अनुरूप दूसरे कार्यों को अपनाकर जीविकोपार्जन कर सकता है और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । इन्हीं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये प्राथमिक उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों को कार्यानुभव की शिक्षा देने के लिए कार्यानुभव सम्बन्धी सेवारत प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया । अध्यापकों को इस प्रशिक्षण में अध्यापक कार्यानुभव तथा उसके महत्व से परिचित कराया गया तथा चाक बत्ती निर्माण, मोमबत्ती निर्माण, टाट पट्टी बुनाई, खिलौने बनाना, कला सम्बन्धी रचना कार्य, पुष्प वाटिका निर्माण, पौधशाला तैयार करना, सूक्ति संग्रह एवं लेखन कार्य गत्ते के डिब्बे बनाना, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण जिल्दसाजी कार्य का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया । अध्यापकों ने इन कार्यों में विशेष रूचि दिखाई तथा स्वयं कार्य करते हुए सम्बन्धित वस्तुओं का निर्माण किया । कार्यानुभव को प्रथम प्रशिक्षण में अध्यापकों की संख्या कम होने के कारण प्रशिक्षण का द्वितीय फेरा आयोजित किया गया ।

उबैदुर रहमान
सहायक अध्यापक
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बीसलपुर-पीलीभीत ।

कार्यालय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर–पीलीभीत ।

दिनांक 28-2-92 से 4-2-93 तक कार्यानुभव प्रशिक्षण

क्र. सं.	नाम	विद्यालय का नाम	विकास खण्ड
1—	श्री हरीराज सिंह	प्रा. वि. भैनपुर	बिलसण्डा
2—	,, रामौतार	,, भदारा	बीसलपुर
3—	,, सुरेशचन्द्र	,, बरखेडा	बीसलपुर
4—	श्रीमती शंखधार	,, जसौली	बीसलपुर
5—	,, शन्नो देवी	,, चढिया सेवाराम	बीसलपुर
6—	,, मालती श्रीवास्तव	,, मोगापुर	बीसलपुर
7—	श्री मु० खलीलखाँ	,, दौलतपुर हीरा	बीसलपुर

कार्यानुभव प्रशिक्षण

कार्यालय ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

बोसलपुर-पीलीभीत ।

प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापकों का दिनांक 20-3-93 से 24-3-93 तक के प्रशिक्षण

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम
1—	श्री राम दास	प्रा० वि० इमलिया गांगी
2—	,, भजन लाल	,, ,,
3—	,, कप्तान सिंह	,, अकबराबाद
4—	,, महेश राम	,, भगवतीपुर
5—	,, सुन्दर लाल	,, मुड़िया नूरानपुर
6—	,, चन्द्र पाल	,, मीरपुर ढकनिया
7—	,, महेश प्रसाद	,, नगरिया लिलागिर
8—	,, श्रीकृष्ण	,, नगरारत्ता
9—	,, प्यारे लाल	,, नरौत्तम नगला
10—	श्रीमती राजेश्वरी देवी	,, बख्तावर लाल
11—	,, नसरीन बानो	,, मानपुर टेहरी
12—	,, अन्जुमन सरीन	,, ,,
13—	श्री द्वारिका प्रसाद	,, अकोडा नौगमिया
14—	,, राम कुमार	,, हेमपुरा
15—	,, देवकी नन्दन	,, हीरापुर डोरी
16—	,, मुन्शी लाल	,, मीरपुदर रतनपुर
17—	श्रीमती सरला देवी	,, चरखौला
18—	श्री सत्य पाल	,, घुंघिचाई
19—	,, रामसेवक	,, कनपरिया

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम
20—	श्री शिवराज सिंह	प्रा० वि० मुडिया भगवन्त
21—	,, होरी लाल	,, परेवा तुरही
22—	,, हरि कृष्ण उपाध्याय	,, करेली
23—	श्रीमती सोमवती	,, बहदिया
24—	श्री राम पाल	,, कासिम पुर
25—	,, रमेश चन्द्र सक्सेना	,, शिवपुर नवदिया
26—	,, झाझन लाल	,, हेमूपुरा
27—	,, काली चरन	,, भगौतीपुर
28—	,, परमेश्वरी दयाल	,, रसूला
29—	,, ढाकन लाल	,, नवदिया भगत

मूल्यांकन-पपत्र

कार्यानुभव प्रशिक्षण

1– कार्यानुभव प्रशिक्षण में आपको किन-किन विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया—

(अ) क्यारी बनाना	—	×
(ब) डिब्बा बनाना	—	22
(स) चॉक बनाना	—	22
(द) आदर्श वाक्य बनाना	—	21
(य) जिल्द-साजी काम	—	25
(र) जुज बन्दी काम	—	6
(ल) मोमबत्ती बनाना	—	27
(व) सीनरी बनाना	—	27
(श) मिट्टी के खिलौने बनाना	—	26
(ष) मूर्तियाँ बनाना	—	29
(स) अन्य क्रिया कलाप	—	7

2—कार्यानुभव प्रशिक्षण में आपको कौन सा प्रशिक्षण रुचिकर लगा—

(अ) आदर्श वाक्य लिखना	—	4
(ब) मिट्टी के खिलौने बनाना	—	3
(स) डिब्बे बनाना	—	7
(द) मूर्तियाँ बनाना	—	10
(य) सीनरी बनाना	—	2
(र) सभी प्रशिक्षण	—	2
(ल) चॉक बनाना	—	3
(ब) मोमबत्तियाँ बनाना	—	14
(श) जिल्दसाजी	—	1

3—प्रशिक्षण से आप कितना प्रभावित हुये।

कम	/	अधिक	/	बहुत अधिक
×	/	18	/	11

4—प्रशिक्षण अवधि के बारे में अपने विचार दीजिए।

प्रशिक्षक, अनुशासन विचार शैली व सहायक सामग्री प्रशंसनीय अनुभवी प्रशिक्षकों का अभावअवधि सीमित है-17/10 दिन (12) / 15 दिन (5)

समय सारिणी में परिवर्तन हो—1

कार्य संतोषजनक रहा—8

प्रशिक्षण रुचिकर लगा—3

5—प्रशिक्षण अवधि कम है या अधिक आप कितने दिनों का प्रशिक्षण चाहते हैं।

अवधि अधिक है	/	कम है	/	सही है	/	10 दिन	/	15 दिन
10	/	17	/	2	/	8	/	4

6— अपने विद्यालय में छात्रों को सिखाने में आपको कौन सा प्रशिक्षण लाभकारी है—

(अ) सूक्ति वाक्य	—	17
(ब) खिलौने	—	11
(स) डिब्बे बनाना	—	8
(द) मूर्तियाँ बनाना	—	2
(य) सीनरी बनाना	—	4
(र) चाक बनाना	—	5
(ल) क्यारी बनाना	—	2
(व) कृषि सम्बन्धी	—	2

7— विद्यालय मे प्रशिक्षण कितना लाभकारी है—

कम	/	बहुत अधिक	/	अधिक
×	/	14	/	15

8 – कार्यानुभव प्रशिक्षण के सम्बन्ध में अपने विचार संक्षेप में लिखें ?

(अ) विषयों का चुनाव क्षेत्र की मांग के अनुरूप हो— 1

(ब) प्राथमिक विद्यालयों में सम्बन्धित सहायक सामग्री उपलब्ध करायी जावे— 20

(स) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अत्यन्त उपर्यागी है— 2

(द) इस प्रशिक्षण से बालकों में आत्मनिर्भरता, जागरुकता, आयेगी उनका तकनीकी विकास होगा — 10

(य) अन्य प्रशिक्षण जैसे—साबुन बनाना, तेल, मंजन, पाउडर आदि का प्रशिक्षण उपयोगी होगा— 4

9—प्रशिक्षण अभिदाता का तरीका कैसा लगा ?

अच्छा		बहुत अच्छा
21	/	8

अंग्रेजी भाषा शिक्षण
(Structural Approach)
तीन दिवसीय

अंग्रेजी भाषा का शिक्षण उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में द्वितीय भाषा के रूप में किया जाता है। आज अंग्रेजी छात्रों के लिए "संसार की जानकारी का झरोखा" है। अंग्रेजी अध्यापन-अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों में चार आधारभूत योग्यताओं–सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का विकास इस प्रकार किया जाय कि उनमें सम्प्रेषण कौशलों का विकास हो जाय।

गत निरीक्षणों के मध्य महसूस हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने वाला अध्यापक विशेष रूप से कक्षा 6 में Structural Approach जो कि अंग्रेजी शिक्षण की महत्वपूर्ण प्रविधि है, का सुव्यवस्थित व क्रमिक प्रयोग नहीं कर रहा है। परिणामस्वरूप छात्र अंग्रेजी भाषा के महत्व को बोझ समझकर आत्मसात कर रहे हैं।

इस कठिनाई को दृष्टिगत रखते हुए उच्च प्राथमिक विद्यालय में अंग्रेजी भाषा पढ़ाने वाले अध्यापकों की तीन दिवसीय गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें संस्थान से अंग्रेजी पढ़ाने वाले अध्यापक श्री वी० एन० गोस्वामी द्वारा तो इस संकल्पना को प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष स्पष्ट किया, साथ ही छात्राध्यापिकाओं द्वारा आदर्श पाठ भी प्रशिक्षणार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किये गये। विषय विशेषज्ञ ड्रमण्ड राजकीय इण्टर कालेज पीलीभीत से तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल इण्टर कालेज अमृताखास के क्रमशः श्री मिथिलेश मिश्र तथा फूलचन्द्र गंगवार को संस्थान में आमन्त्रित कर (Structural Approach) पर विशेष प्रकाश डाला गया। प्रशिक्षणार्थियों से (Structural Approach) के अभ्यास भी करवाये गये।

STRUCTURAL APPROACH

MEANING OF STRUCTURAL APPROACH :—

In this approach the basis of teaching is structures or patterns of English. Structure or pattern is made of words which are arranged in a specified order. Therefore it is called structural approach.

It is defined as structural approach as a scientific study of the English language, their analysis and logical arrangements.

PRINCIPLES OF STRUCTURAL APPROACH :—

French has stated the following two principles of structural approach :

1. Importance of the child's activity rather than the activity of teacher.
2. Importance of speech for firmly fixing words.

TYPES OF STRUCTURES :—Structures can be divided into the following four categories—

1. SENTENCE PATTERNS :—French sentence patterns as, "the word pattern means a model, from which many things of the same kind and shape can be made."

A sentence pattern is therefore a model for sentence which will be of the same shape and construction at though made up different words." For example : It is 5 O'clock. Are you going ? Taking

the first model sentence we can make many sentences like It is 5 O' clock.

2. PHRASE PATTERNS :—Phrase is a word or group of words which express an idea without its being a sentence or clause. For example under the table, In the basket, Inspite of.

3. FORMULAS :—Formulas are those words which are used on certain occasions. For example How are you ? Good morning ! Excuse me etc.

4. IDIOMS :—Idioms like (i) Born with silver spoon (ii) A red letter day etc.

AIMS OF STRUCTURAL APPROACH :—The following are the aims of this approach :

1. To lay the foundation of English by establishing through drill & repetition of about 2'5 graded structures.

2. To enable the children to attain mastry over an essential vocabulary of about 300 root words for active use.

3. To correlate the teaching of grammar and compositions with the reading lessons.

4. To teach the four fundamental skills namely understanding, speaking, reading & writing in the order.

STRUCTURAL SYLLABUS :-The following are some of the qualities of a good structural syllabus :

1. It can be used by an average trained teacher.

2. It can enable students to do compositions after learning five or six items.

3. Text books that go along with structural syllabus should be interesting.

MERITS OF STRUCTURAL APPROACH :—

The following are the merits of this approach :

1. According to Jes person "Language can not be seperated from sound."

This approach emphasis more on speech or oral aspect of language learning.

2. With a well selected and well graded programme this approach can be effectively adopted at all stages.

3. It creats appropriate environment for learning the language.

4. Structural can help in teaching prose, poetry etc.

5. Due to much oral drilling whatever is learnt in the class remains stable in their minds.

6. All the time of learning structures, the child inductively learns some grammar.

7. This approach establishes a system in teaching English. It systematise the work of syllabus maker, text book, writer and teacher.

DEMERITS OF THE STRUCTURAL APPROACH :—

1 Like the direct method it is most suited to lower classes.

2. Only well selected sentence patterns can be taught through this approach.

3. This approach is rarely successful in crowded classes.

4. It is difficult to apply this approach every sphere to teaching and testing.

Mrs. PREETI
B.T.C. II Year

AIMS OF LEARNING ENGLISH IN THE PRESENT

CONTEXT AT JUNIOR HIGH SCHOOL LEVEL-

As a matter of fact, it is a time when old equations and constraints are seeming to be lapidated and the new ones are being formed. So to face with the present time, it quite essential for us to adjust ourselves in accordance with the new dimensions. Now in the present era English has relagated as an International language. No doubt Hindi is our national language as indicated in our constitution, however, as a surprising matter, so for only so far of total population of our country, residing in U. P., M. P., Rajsthan and other areas of Hindi belt know and use it. Even more one should note that the higher literature of science, engineering and technology is available only in English. This is why, we have compelled to teach English at Junior high school level. So that today's child can become tommorrow's citizen who is able in facing with the time.

Thus keeping in our mind the above description we find four aims of English teaching.

1. To enable the students to understand English correctly when spoken.

2. To enable the students to understand English correctly when written i.e. to enable them to read

written English correctly.

3. To enable the students to write correct sentences in English.

4. To enable the students to express their Ideas, attitude etc. correcty in English.

Now it is should be noted that while in England a child learns English as his mother tongue but in India the situation is quite different. So the teaching techniques adopted there are no more successful here. So we require such methods of teaching as are applicable for the teaching of a second language. Some important of them are as under :—

1. Grammar – translation method.

2. Structural Approach method.

We are here to discuss about the latter method i.e. structural approach.

THE STRUCTURAL APPROACH METHOD :—

We know that every language is formed by the inormous words of different groups. And when these words are spoke in the given configuration as according to language, a sentence is formulated. In the above manner, the different configuration of words which is turn form meaningful sentences is known as the structural approach.

Now keeping a view of psychology, the structural approach method is of more importance for the small children. In this method, the various examples of sentences artaining to daily life use and connected to surrounding neighbouring environment are put before the pupil. For example to explain and teach the use

of this and that the following examples will be demonstrated before pupil.

(A) 1. This is a chair.
2. This is a pen.

(B) 1. That is a wall.
2. That is the road.

Simmilarly the structures of the different sentences may be explained and taught for the effective learning. The English teacher should create English atmosphere in the class in the natural way.

Mrs. PREETI
B.T.C. II Year

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर–पीलीभीत

शैक्षिक गोष्ठी:—जूनियर स्तरीय शिक्षक,
विषय—स्ट्रक्चरल एप्रोच टू इंगलिश टीचिंग
अवधि—दिनांक 9-2-93 से 10-2-93 तक

प्रथम दिवस

समय	कार्यक्रम
10-00 से 11-00	पंजीकरण
11-00 से 12-00	—
12-00 से 1-00	प्राचार्य द्वारा उद्घाटन जूनियर स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण की स्थिति
1-00 से 2-00	मध्यान्तर
2-00 से 3-00	अंग्रेजी शिक्षण एवं अंग्रेजी भाषा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व
3-00 से 4-00	अंग्रेजी शिक्षण की विभिन्न विधियां
4-00 से 5-00	खेल/स्काउटिंग

द्वितीय दिवस

10-00 से 11-00	अंग्रेजी शिक्षण में स्ट्रक्चरल एप्रोच का महत्व
11-00 से 12-00	स्ट्रक्चरल एप्रोच द्वारा शिक्षण हेतु पाठयोजना का निर्माण
12-00 से 1-00	आदर्श पाठ माडल लैसन का प्रदर्शन स्ट्रक्चरल एप्रोच द्वारा

1-00 से 2-00	मध्यान्तर
2-00 से 3-00	अंग्रेजी शिक्षण से सम्बन्धित शिक्षकों की समस्यायें
3-00 से 4-00	अंग्रेजी शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का निस्तारण
4-00 से 5-00	गोष्ठी का समापन

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर - पीलीभीत

शैक्षिक विचार गोष्ठी उ० प्रा० वि० स्तरीय शिक्षक

विषय : स्ट्रक्चरल एप्रोच टू इंगलिश टीचिंग

दिनांक 26-3-93 से 28-3-93 तक

प्रथम दिवस

समय	कार्यक्रम
10-00 से 12-00 तक	पंजीकरण एवं उद्घाटन
12-00 से 1-00 तक	प्राचार्य द्वारा उद्घाटन अंग्रेजी शिक्षण की वर्तमान स्थिति
1-00 से 2-00 तक	भोजनावकाश
2-00 से 3-00 तक	अंग्रेजी भाषा का महत्व
3-00 से 4-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण के उद्देश्य
4-00 से 5-00 तक	खेल/स्काउटिंग

द्वितीय दिवस

10-00 से 11-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण में दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग
11-00 से 12-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण की विधियां
12-00 से 1-00 तक	स्ट्रक्चरल एप्रोच का महत्व व परिचय
1-00 से 2-00 तक	भोजनावकाश
2-00 से 3-00 तक	स्ट्रक्चरल एप्रोच द्वारा पाठयोजना का निर्माण
3-00 से 4-00 तक	माडल लेसन का प्रदर्शन स्ट्रक्चरल एप्रोच द्वारा
4-00 से 5-00 तक	खेल/स्काउटिंग

तृतीय दिवस

10-00 से 11-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण में मूल्यांकन
11-00 से 12-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण सम्बन्धी शिक्षा की समस्यायें
12-00 से 1-00 तक	अंग्रेजी शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का निस्तारण
1-00 से 2-00 तक	भोजनावकाश
2-00 से 5-00 तक	मूल्यांकन एवं समापन

शैक्षिक गोष्ठी

जूनियर स्तरीय शिक्षक शीर्षक स्ट्रक्चरल एप्रोच टू इंग्लिश टीचिंग

दिनांक 9-2-93 से 10-2-93 तक

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम	विकास क्षेत्र
1—	श्री ओम प्रकाश	उ० प्रा० वि० बीसलपुर	बीसलपुर
2—	,, रामबहादुर	,, बढैरा	बरखेड़ा
3—	,, खूब चन्द्र	,, परेवा वैश्य	अमरिया-2
4—	,, चिरौंजी लाल	,, अमृत	बिलसण्डा
5—	,, रमेश चन्द्र	,, मरौरी	,,
6	,, जय प्रकाश	,, कटैयापंडरी हरदासपुर	अमरिया-1
7—	,, कन्हई लाल	,, अकबराबाद	बिलसण्डा-2
8—	,, रामचरन लाल	,, डांग	अमरिया-1
9—	,, बलवन्त सिंह	,, निजामडांडी	ललौरी खेड़ा
10—	,, छेदा लाल	,, दियोनीडाम	अमरिया-1
11—	,, बाबू राम	,, अकबराबाद	बिलसण्डा-2
12—	,, लीलाधर	,, टाहपौटा	मरौरी
13—	,, लालाराम	,, ईटगांव	बिलसण्डा-2
14—	,, प्रीतम सिंह	,, कनाकोर	ललौरी खेड़ा
15—	,, सूरज पाल	,, भिकारीपुर	अमरिया-2
16—	,, विनोद विहारी	,, बमरौली	बिलसण्डा-1
17—	,, रामभरोसे लाल	,, अर्जुनपुर	बीसलपुर
18—	, लल्लू राम गुप्ता	,, बहरूआ कालौनी	अमरिया-2
19—	,, कृपाशंकर रस्तोगी	,, भिकारीपुर	,,
20—	,, चूरामणि	,, दियोरिया कला	बिलसण्डा-2
21—	,, दुल्लीसिंह	,, बरहाविक्रम	अमरिया-2
22—	,, बुद्ध सेन	,, जहानाबाद	ललौरी खेड़ा
23—	,, जानकी प्रसाद	,, ,,	,,
24—	,, राम स्वरूप	,, नगरिया कालौनी	अमरिया

क्र०सं०	नाम	विद्यालय का नाम		विकास-क्षेत्र
25—	श्री बृन्दावन सिंह	उ० प्रा० वि०	कुरैली	बिलसण्डा
26—	,, मथुरा प्रसाद	,,	रामनगर	बरखेड़ा
27—	,, बाबू राम	,,	चन्दपुरा	बीसलपुर
28—	,, नत्थू लाल	,,	खंनका	,,
29—	,, काशी राम	,,	खमरियापुल	ललौरीखेड़ा
30—	,, सुमेर लाल	,,	मुहम्मदपुर भजा	बीसलपुर
31—	,, गोविन्द सिंह	,,	,,	,,
32—	,, हेम राज	,,	,,	,,
33—	,, बाबू राम	,,	दियोरिया कला	बिलसण्डा

सेवारत–प्रशिक्षण वर्ष 1992–93

उ० प्राथमिक सहायक अध्यापकों का स्ट्रक्चरल एप्रोच टू इंगलिश टीचिंग का प्रशिक्षण (अवधि 26-3-93 से 28-3-93 तक)

क्र० सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास-क्षेत्र
1	श्री इन्द्रजीत	उ. प्रा. पा. कबीरगंज	पूरनपुर
2	श्रीमती माधुरी देवी	,, बिहारीपुर-हीरा	बीसलपुर
3	श्री प्रेमराज	,, रामपुर अमृत	बिलसन्डा
4	श्री भगवान दास	,, बढैरा	बरखेड़ा
5	श्री लालाराम	,, ,,	,,
6	श्री हीरा लाल	,, नगरिया कालौनी	पीलीभीत
7	श्री राजेन्द्र नाथ	,, घुंघचिहाई	पूरनपुर
8	श्रीमती पुष्प लता	,, बमरैली	बिलसन्डा
9	श्री प्यारे लाल	,, पूरनपुर	पूरनपुर-मध्य
10	श्री रमेश चन्द्र	,, वरौटी	बिलसन्डा
11	श्री मिश्री लाल	,, खन्का	बीसलपुर
12	श्री सत्य पाल सिंह	,, रडैता	बीसलपुर
13	श्रीमती इन्द्रजीत कौर	,, बिलसन्डा	बिलसण्डा
14	श्री गिरीश कुमार	,, अर्जुनपुर	बीसलपुर
15	श्री वंशीधर मिश्रा	,, शिवनगर	पूरनपुर-पश्चिमी
16	श्री भूप राम	,, दियोहना	बरखेड़ा
17	श्री वेद प्रकाश	,, सबलपुर	पूरनपुर-पूर्वी
18	श्री बाबू सिंह	,, रसयाखानपुर	बीसलपुर
19	श्री राजेन्द्र सिंह	,, पिपरिया दुलई	पूरनपुर-मध्य
20	श्री रामा नन्द	,, विहारीपुर-हीरा	बिलसन्डा
21	श्री कन्ही लाल	,, बरखेड़ा	बरखेड़ा
22	श्री सुरेशचन्द्र शर्मा	,, ,,	,,
23	श्री विनोद विहारी लाल	,, बमरौली	बिलसन्डा
24	श्री खूब चन्द्र	,, परेवाअनूप	अमरिया
25	श्री बृजविहारी लाल	,, घुंघचिहाई	पूरनपुर-पूर्वी

क्रम सं०	नाम	विद्यालय का नाम	विकास-क्षेत्र
26	श्री वृन्दावन सिंह	उ. प्रा. पा. करैली	बिलसण्डा
27	श्री नत्थू लाल	,, बरखेड़ा	बरखेड़ा
28	श्री देवदत्त गंगवार	,, बीसलपुर	बीसलपुर
29	श्री छोटे लाल	,, गझाडा	बरखेड़ा
30	श्री अवदुल हफीज	,, बरहाविक्रम	अमरिया
31	श्री बीरेन्द्र नाथ	,, रढैता	बीसलपुर

शैक्षिक गोष्ठी

अंग्रेजी शिक्षण दिनांक 9-2-93 से 10-2-93 का मूल्यांकन

1—"स्ट्रक्चरल एप्रोच" सम्बन्धी शैक्षिक गोष्ठी आपको कैसी लगी ।

कम रुचिकर	रुचिकर	अधिक रुचिकर	कुछ नहीं
—	19	11	2

2—बालकों को अंग्रेजी सिखाने में यह विधि किस सीमा तक सहायक होगी ।

कम	अधिक	सामान्य	कुछ नहीं
—	20	11	1

3—क्या स्ट्रक्चरल एप्रोच विधि स्पष्ट करने हेतु प्रशिक्षकों/वक्ताओं द्वारा प्रयोग विधि अपनायी गयी

हाँ	नहीं	कुछ नहीं
31	1	—

4—गोष्ठी में दिये गये अंग्रेजी माडल पाठ (आदर्श पाठ) से आप कितने लाभान्वित हुए ।

कम	सामान्य	अधिक	कुछ नहीं
—	17	15	—

5 गोष्ठी की अवधि में प्रशिक्षकों/वक्ताओं का व्यवहार कैसा रहा ।

कम अच्छा	अच्छा	अधिक अच्छा	कुछ नहीं
—	10	20	2

6— गोष्ठी की अवधि दो दिन से कम होनी चाहिये या अधिक या इतनी ही पर्याप्त है ।

कम	अधिक	पर्याप्त	कुछ नहीं
—	10	22	—

7—गोष्ठी में सुधार हेतु अपने सुझाव संक्षेप में लिखें ।

1- अधिकाँश अध्यापकों के सुझाव थे, कि अंग्रेजी शिक्षा में सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाय ।

2- आदर्श पाठ प्रस्तुत करने हेतु "7" शिक्षकों ने सुझाव दिये ।

3- विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिलाने हेतु "4" शिक्षकों ने सुझाव दिये ।

4- इस प्रश्न पर कोई भी सुझाव न देने वाले शिक्षकों की संख्या-"6"

अंग्रेजी शिक्षण

1—स्ट्रक्चरल प्रयोग सम्बन्धी शैक्षिक विचार गोष्ठी आपको कैसी लगी ।

कम रुचिकर	रुचिकर	अधिक रुचिकर	कुछ नहीं कहा
×	11	16	×

2—बालकों को अंग्रेजी सिखाने में यह विधि किस सीमा तक उपयोगी है ।

कम	सामान्य	अधिक	कुछ नहीं कहा
×	9	18	×

3—क्या स्ट्रक्चरल एप्रोच विधि स्पष्ट करने हेतु प्रशिक्षकों वक्ताओं द्वारा प्रयोग विधि अपनायी गयी ।

हाँ	नहीं	अधिक	कुछ नहीं कहा
12	6	×	×

4—गोष्ठी में दिये गये अंग्रेजी माडल (आदर्श पाठ) से आप कितने लाभान्वित हुए ।

कम	सामान्य	अधिक	कुछ नहीं कहा
×	12	1	×

5—गोष्ठी की अवधि में प्रशिक्षकों वक्ताओं का व्यवहार कैसा रहा ।

कम अच्छा	अच्छा	अधिक अच्छा	कुछ नहीं कहा
×	10	16	×

6—गोष्ठी की अवधि दो दिन से कम होनी चाहिए या अधिक या इतनी ही पर्याप्त है ।

कम	अधिक	पर्याप्त	कुछ नहीं कहा
×	15	9	3

गोष्ठी में सुधार हेतु अपने सुझाव संक्षेप में लिखें ।

(1) समय बढ़ाना चाहिये ।

(2) सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिये ।

(3) वर्ष में एक बार इस प्रकार की गोष्ठियाँ आवश्यक होनी चाहिए ।

शैक्षिक तकनीकी

परिषदीय औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा अधिकारियों तथा कर्मचारियों की तीन दिवसीय कार्यशाला "शैक्षिक तकनीकी" विषय पर दिनांक 12 जनवरी '93 से 14 जनवरी '93 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर के विशाल कक्ष में आयोजित की गई।

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार है जिसका उद्देश्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार से क्रियान्वित एवं नियोजित किया जाये कि अधिगम स्तर को वांछनीय उद्देश्यों के अनुकूल समुन्नत किया जा सके। शिक्षण तकनीकी वह शास्त्र है जो शिक्षक की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है तथा सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अधिक समुन्नत करता है।

कार्यशाला में जिन बिन्दुओं में व्यापक चर्चा हुई वे बिन्दु इस प्रकार हैं— शैक्षिक तकनीकी का परिचय एवं उद्देश्य, शैक्षिक तकनीकी के प्रकार, सूक्ष्म-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी के रूप एवं परिचय, शिक्षण प्रतिमान, हार्डवेयर शिक्षण से सम्बन्धित समस्यायें, शिक्षा तकनीकी एवं जन माध्यम, प्रोजेक्टर तथा ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग, प्राथमिक शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में अनुभव की गई समस्यायें एवं उनका निदान।

इस कार्यशाला में जनपद पीलीभीत के जिला अनौपचारिक शिक्षा अधिकारी, उप विद्यालय निरीक्षक, परियोजना अधिकारी (अनौ० शि०) तथा सभी प्रति उप-विद्यालय निरीक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में डा० शिव भूषण त्रिपाठी प्रवक्ता उत्पादन राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान लखनऊ ने दिनांक 13-2-93 को प्रतिभाग किया तथा सभी प्रतिभागियों को शैक्षिक तकनीकी के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी।

जनपदीय औपचारिक/अनौपचारिक शिक्षा अधिकारियों तथा कर्मचारियों की तीन दिवसीय कार्यशाला

(शैक्षिक तकनीकी)

दिनांक 12-1-93 से 14-1-93 तक

समय विभागीय चक्र

प्रथम दिवस

समय	कार्यक्रम	नाम
10-00 से 1-00 तक	पंजीकरण.....	वी. एन. गोस्वामी
	शैक्षिक तकनीकी का परिचय एवं उद्देश्य	
1-00 से 2-00 तक	मध्यावकाश	
2-00 से 4-00 तक	शैक्षिक तकनीकी के प्रकार	उबैदुर रहमान
	सूक्ष्म शिक्षण	प्राचार्य

द्वितीय दिवस

10-00 से 1-00 तक	शैक्षिक तकनीकी के रूप एवं परिचय	मु० मुबीन
	शिक्षण प्रतिमान	उबैदुर रहमान
1-00 से 2-00 तक	मध्यावकाश	
2-00 से 4-00 तक	प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत समस्यायें	मु० मुबीन
	हार्डवेयर शिक्षण तकनीकी का परिचय और क्रियान्वयन/प्रोजेक्टर	वी. एन. गोस्वामी
	ओवर हैड प्रोजेक्टर—एपीडास्कोप—मैन्किलैन्टन	मु० मुबीन

तृतीय दिवस

10-00 से 1-00 तक	प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत हार्डवेयर शिक्षण से सम्बन्धित समस्यायें/शिक्षा तकनीकी एवं जन माध्यम	मु० मुबीन

1-00 से 2-00 तक	मध्यावकाश	
2-00 से 4-00 तक	प्राथमिक शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में व्यक्तिगत रूप से महसूस की गयी समस्याओं पर एक छोटा नोट/समाधान एवं उपाय समापन ।	वी एन. गोस्वामी

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर–पीलीभीत ।

शिक्षा तकनीकी के रूप एव परिचय :—शिक्षा तकनीकी का अन्तिम उद्देश्य यही है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार स क्रियान्वित एवं नियोजित किया जाये कि अधिगम स्तर को वांछनीय उद्देश्यों के अनुकूल समुन्नत किया जा सके। शिक्षा तकनीकी के विभिन्न रूप मूल रूप से शिक्षा तकनीकी द्वितीय तथा शिक्षा तकनीकी तृतीय के ही अंग हैं। यहाँ पर उन्हें सामान्य स्वरूप में विश्लेषित एवं विवेचित किया जा रहा है। शिक्षा तकनीक के ये स्वरूप निम्न प्रकार हैं।

1. **शिक्षण तकनीकी** :—शिक्षण तकनीकी वह शास्त्र है जो शिक्षक की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है तथा सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अधिक समुन्नत करता है। —वी० एफ० स्किनर

"शिक्षण तकनीकी एक ऐसी विचारधारा है जो शिक्षण कला को अधिक स्पष्ट, सरल वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक बनाती हुई छात्रों और शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करती है, साथ ही यह शिक्षण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली, मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक बनाती है जिससे छात्र, शिक्षक और समाज सभी लाभान्वित हो सकें।" —एस० पी० कुलश्रेष्ठ

शिक्षण तकनीकी की विशेषतायें :—1. शिक्षण तकनीकी व्यवहार के तीनों पक्षों ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोज्ञानात्मक का अध्ययन करती है।

2. शिक्षण तकनीकी अपने दोनों पक्षों पाठ्य वस्तु एवं सम्प्रेषण स्वरूप में समायोजन स्थापित करती है।

3. शिक्षण तकनीकी कक्षीय व्यवहार का अवलोकन, निरीक्षण, व्याख्या एवं मूल्यांकन तथा सुधार के लिये सतत् प्रयत्नशील रहती है।

4. शिक्षण तकनीकी में स्मृति, चिन्तन स्तर के शिक्षण की अलग-अलग व्यवस्था करती है।

5. शिक्षण तकनीकी शिक्षण का नियोजन, व्यवस्था, मार्ग दर्शन तथा नियन्त्रण के मध्य सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित करती है।

6. शिक्षण तकनीकी शिक्षण हेतु प्रभावी शिक्षण विधियों, नीतियों एवं युक्तियों के अपनाने में सहायता प्रदान करती है।

7. शिक्षण तकनीकी शिक्षण अधिगम परिस्थितियों के अनुकूल शिक्षक एवं छात्र दोनों को सम्मिलित रूप से अपने-अपने अवाँछनीय व्यवहारों पर नियन्त्रण रखना सिखाती है।

8. शिक्षण तकनीकी शिक्षक तकनीकी के तीनों पदों इनपुट प्रोसिस तथा आउटपुट से सम्बन्धित रहती है।

2. अनुदेशन तकनीकी :—"अनुदेशन तकनीकी शिक्षा तकनीकी की वह शाखा है जो हमें शिक्षण सामग्री तथा अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री के सही उपयोगों के विषय में सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक दोनों प्रकार की सूचनायें प्रदान करती है।" —कुलश्रेष्ठ

अनुदेशन तकनीकी की विशेषतायें : 1. अनुदेशन तकनीकी का प्रमुख कार्य सूचना प्रदान कराना।

2. अनुदेशन तकनीकी ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।

3. अनुदेशन तकनीकी सही उत्तरों को पुनंबलित करके अधिगम प्रक्रिया को मजबूत बनाती है।

4. अनुदेशन तकनीकी के आधार पर दर्शन, मनोविज्ञान एवं उसके सिद्धान्तों द्वारा निर्मित किया जाता है।

5. अनुदेशन तकनीकी, अनुदेशन सिद्धान्तों का निर्माण करती है।

6. अनुदेशन तकनीकी कक्षीय परिस्थितियों में छात्रों के अन्तिम व्यवहार का मूल्यांकन करती है।

7. अनुदेशन तकनीकी शिक्षक के अभाव में स्वचलित साधनों द्वारा भी शिक्षण प्रदान करती है।

8. अनुदेशन तकनीकी शिक्षण को प्रभावशाली बनाने हेतु मानवीय एवं अमानवीय दोनों साधनों को प्रयुक्त करती है।

3. व्यवहार तकनीकी :—व्यवहार तकनीकी वह विज्ञान है जो शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के व्यवहारों का वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन करती है और आवश्यकतानुसार उनके व्यवहारों का परिमार्जन करती है।

व्यवहार तकनीकी की विशेषतायें :—1. व्यवहार तकनीकी छात्र के शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनों प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन करती है।

2. व्यवहार तकनीकी छात्रों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिये प्रयासरत रहती है।

3. यह मनोविज्ञान के अधिगम शिक्षण सिद्धान्तों को विकसित करती है।

4. यह शिक्षण सिद्धान्तों को विकसित करती है।

5. यह शिक्षा का वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ एवं शुद्ध रूप में मूल्यांकन करती है।

6. यह व्यवहार के ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के उद्देश्यों की पूर्ति में मदद देती है।

7. व्यवहार तकनीक ने अनुबन्धन आपरेन्ट अनुबन्धन तथा विभिन्न पुर्नबलन सिद्धान्तों का आविष्कार किया है।

8. यह वैयक्तिक विभिन्नताओं को मान्यता प्रदान करती है।

4. अनुदेशन प्रारूप—"छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए अधिगम सिद्धान्तों के साथ-साथ शिक्षण की परिस्थितियों, कार्यों, विधियों और उपागमों को सम्मिलित रूप में अनुदेशन प्रारूप कहा जाता है।" अनुदेशन प्रारूप आधुनिक कौशलों, प्रविधियों तथा युक्तियों का शिक्षण और प्रशिक्षण में प्रयोग होता है। अनुदेशन प्रारूप इन कौशलों प्रविधियों और युक्तियों के माध्यम से शिक्षा के वातावरण को नियन्त्रित करता है और कक्षा में अधिगम कार्य को सरल, सुगम तथा उपादेय बनाने में सहायता करता है।

—डेरिक अनविन

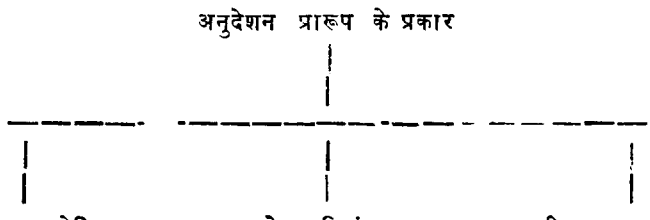

उक्त तीनों प्रारूप एक दूसरे पर आश्रित तथा सहभागिता के रूप में कार्य करते हैं। ये शिक्षा तकनीकी के तीनों पदों इनपुट, आउटपुट तथा प्रोसिस से अपने को सम्बन्धित रखते हैं।

1. प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप—मौखिक रूप में प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप कार्य विश्लेषण तथा सम्बन्धित प्रशिक्षण के विभिन्न घटकों से सम्बन्धित रहता है। यह शिक्षा तकनीकी के इनपुट से सम्बन्धित होता है। सेना के बम वर्षकों के प्रशिक्षण हेतु इस प्रारूप को प्रयुक्त किया गया। इस प्रारूप में एक सीधी विश्लेषण विधि का सहारा लिया जाता है। जिसमें प्रशिक्षण अंगों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। कालान्तर में इस विधि का प्रयोग शिक्षा प्रशिक्षण में प्रचुरता से किया जाता है।

प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप के सोपान :—

1—*कार्य तत्वों की पहचान करना।*

2—कार्य तत्वों को प्राप्त करने का प्रयास करना।

3—अधिगम परिस्थिति की व्यवस्थापना।

प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप की उपयोगिता :—

1—यह शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण प्रतिमानों को विकसित करके अभूतपूर्व योगदान करता है।

2—यह अनुदेशन विकास में सहायता करता है।

3— इसके द्वारा शाखीय अभिक्रमित अधिगम का विकास हुआ है।

4—शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अधिगम परिस्थितियों का अध्ययन विश्लेषण एवं उनके अनुरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयासों में मदद मिलती है।

5—प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार एवं विकास में सहायक है।

6—छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखती है।

7—यह शिक्षक प्रशिक्षण को प्रभावी बनाती है।

2. सम्प्रेषण नियंत्रण प्रणाली :—साइबरनोटिक्स एक प्रकार से प्रशासन व्यवस्था का प्रारूप है। इस प्रारूप का केन्द्रीय तत्व नियन्त्रण है। यह प्रारूप गतिशीलता एवं स्वचालन को लक्ष्य मानता हुआ इस बात पर जोर देता है कि सम्प्रेषण नियन्त्रण प्रक्रिया की समस्त विधियाँ छात्रों के व्यवहार को नियन्त्रित करके उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाये। सम्प्रेषण की संरचना एवं सूचना की प्रवृत्ति व्यवस्था के निश्चित तत्वों के माध्यम से ही आगे बढ़ती है।

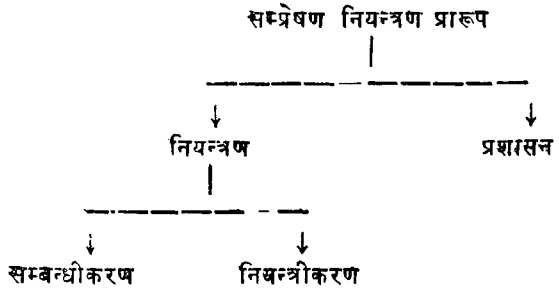
सम्प्रेषण नियन्त्रण प्रारूप
नियन्त्रण
प्रशासन
सम्बन्धीकरण
नियन्त्रीकरण

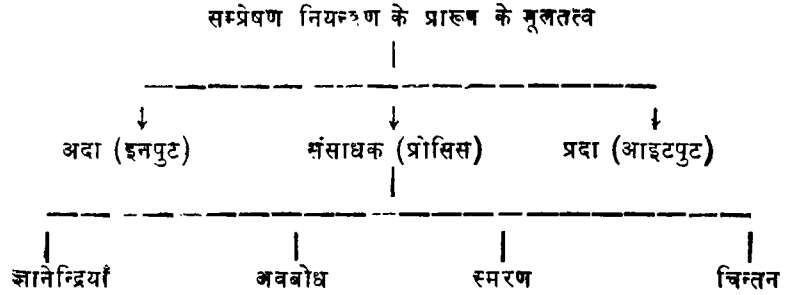
सम्प्रेषण नियन्त्रण के प्रारूप के मूलतत्व
अदा (इनपुट)
संसाधक (प्रोसिस)
प्रदा (आइटपुट)
ज्ञानेन्द्रियाँ
अवबोध
स्मरण
चिन्तन

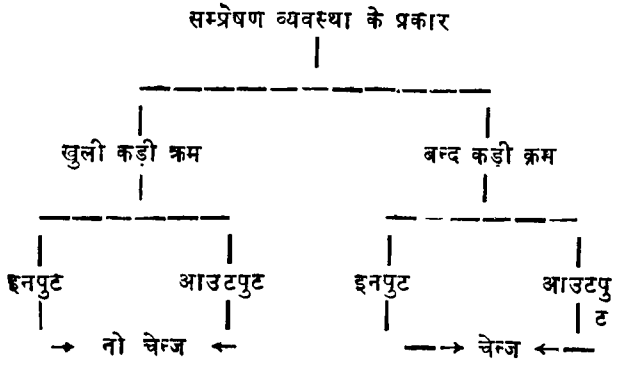
सम्प्रेषण व्यवस्था के प्रकार
खुली कड़ी क्रम
बन्द कड़ी क्रम
इनपुट
आउटपुट
इनपुट
आउटपुट
नो चेन्ज
चेन्ज

सम्प्रेषण सिद्धान्त :—

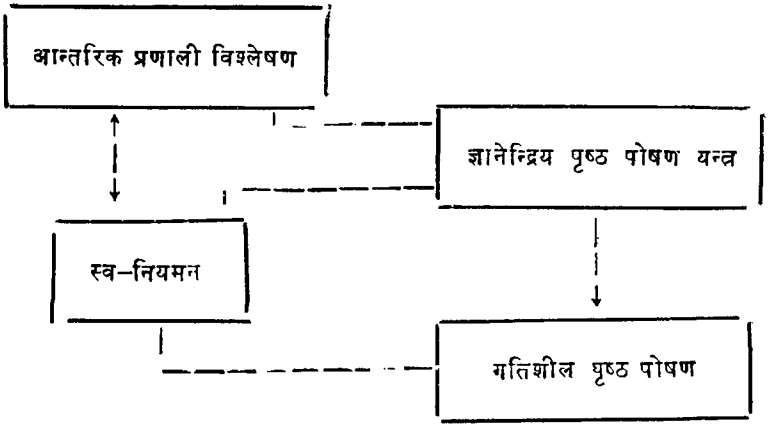

सम्प्रेषण नियन्त्रण प्रारूप की उपयोगिता :—

1. इसके द्वारा शैक्षिक परिस्थितियों में बालक के व्यवहार को नियन्त्रित किया जा सकता है तथा उसे ऐच्छिक दिशा में मोड़ा जा सकता है।
2. बालक के व्यवहार को नियोजित किया जा सकता है।
3. सूचनाओं के सम्प्रेषण तथा शिक्षण को प्रभावशाली बनाता है।
4. स्वत: शिक्षण के आधार पर पुन:वर्तन की दिशा में उन्नति करता है।
5. मानवीय गुणों के विकास तथा मूल्यों के विकास में सहायता करता है।

प्रणाली उपगम :—

प्रणाली उपगम एक निरन्तर अन्त: क्रिया या स्वतन्त्र क्रियाओं का समूह है जो एकरूपता धारण कर लेती है।

प्रणाली उपगम के पद :—

1. आवश्यकता को परिभाषित करना।
2. उद्देश्यों का निर्धारण करना।
3. सीमाओं का वर्णन करना।
4. समस्या समाधान के विकल्प खोजना।
5. प्रणाली का क्रियान्वयन।
6. मूल्यांकन।
7. परिमार्जन।

प्रणाली उपागम का शिक्षा एवं अनुदेशन में अनुपयोग :—

1. अनुदेशन उद्देश्यों के परिभाषीकरण में ।
2. अनुदेशन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सम्बन्धित कार्यों के निर्धारण में ।
3. अधिगम कर्ता के वैयक्तिक गुणों का ज्ञान प्राप्त करने में ।
4. विशिष्ट प्रकरण हेतु उसी के अनुरूप शिक्षण विधि का चयन करने में ।
5. अनेक प्राप्त विकल्पों में से उचित अधिगम अनुभवों को प्राप्त करना ।
6. शिक्षार्थियों हेतु उपयुक्त सामग्री, साधनों, स्रोतों एव वातावरण का चयन करना ।
7. शिक्षक शिक्षण समूह एवं विद्यार्थियों के वैयक्तिक कार्यों को परिभाषित करने में ।
8. शिक्षण कार्यक्रम के प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने में ।
9. छात्रों के अधिगम को अधिकाधिक पुष्ट करना ।

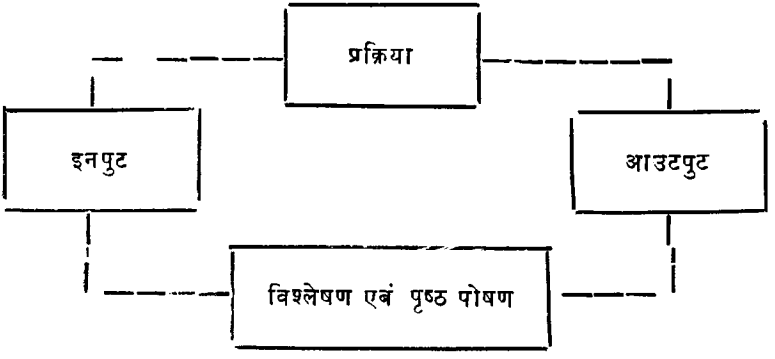

By—
Mohd. Mobeen
Distt. Institute of Education & Training
BISALPUR-PILIBHIT

शैक्षिक तकनीकी कार्यशाला
तीन दिवसीय

दिनांक 12-1-93 से 14-1-93 तक

क्र.सं.	नाम कर्मचारी	पद	क्षेत्र
1—	श्री वृज पाल सिंह	एस०डी०आई०	ललौरीखेड़ा
2—	श्री ओमप्रकाश दीक्षित	,,	बिलसण्डा-2
3—	श्री हरदयाल सिंह	,,	मरौरी
4—	श्री रघुनन्दन प्रसाद	,,	पूरनपुर
5—	कु० कामेश्वरी देवी	,,	अमरिया-2
6—	श्री विजय लक्ष्मी पाण्डेय	,,	पीलीभीत
7—	श्री आशा मिश्रा	जि० अनौपचारिक अधिकारी	पीलीभीत
8—	श्रीमती वीरवाला	परियोजना अधिकारी	बीसलपुर
9—	श्री सतीशचन्द्र शर्मा	उ० वि० नि०	पीलीभीत
10—	श्री मदन लाल पाठक	एस० डी० आई०	बिलसण्डा
11—	श्री मुकुट विहारी लाल	,,	बीसलपुर-3
12—	श्री पोथी राम	,,	बीसलपुर-1
13—	श्री नत्थू लाल	,,	पूरनपुर-मध्य
14—	श्री रणजीत प्रसाद	,,	पूरनपुर-पूर्वी

संस्कृत भाषा का महत्व

संस्कृत भाषा हमारे देश की प्राचीनतम् भाषा है। सभ्यता के उषाकाल में संस्कृत भाषा का उदय हुआ और सर्वप्रथम भारतवर्ष को इस उदय का दर्शन हुआ। विश्व के इतिहासकार छोटे बड़े किसी भी मापदण्ड से जब भारतीय वाङ्मय को मापने चलते हैं तो बलात् उनकी लेखनी से संस्कृत साहित्य की प्रशंसा के लिए शब्द निकल पड़ते हैं।

संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति का मूल हैं। भारतीय संस्कृति को समझने के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान जितना आवश्यक है उतना अन्य भाषाओं का नहीं। जिस राष्ट्र ने अपनी संस्कृति की इस अजर-अमर आत्मा को नहीं पहचाना, वह राष्ट्र अपना अस्तित्व खो बैठता है। अतः भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिए एवं परिचय प्राप्त करने के लिए भी संस्कृत भाषा का गहन अध्ययन आवश्यक है।

संस्कृत साहित्य से ही भारतीय दर्शन के विषय में जानकारी हमें मिलती है। भारतीय दर्शन की विशेषता यह है कि वह सार्वभौम है। पाश्चात्य दर्शन हमारे भारतीय दर्शन से अधिक प्रभावित हुआ है। अतः संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना हम भारतीय दार्शनिक विचारों के अमूल्य योगदान से वंचित रह जायेंगे।

काव्य, नाट्य शास्त्र, गद्य साहित्य तथा कथा साहित्य की दृष्टि से संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं के साहित्य से कहीं आगे है। संस्कृत भाषा में लिखित भवभूति, कालिदास, श्री हर्ष, माघ आदि महाकवियों, मास के नाटक तथा गद्य-साहित्य में सुबन्धु बाण तथा दण्डी की कृतियाँ आज भी उतनी ही नवीन एवं आनन्द दायिनि हैं जितनी कि वे अपने रचनात्मक काल में थीं।

प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य :—

प्रारम्भिक स्तर अर्थात् कक्षा 6, 7, 8 के छात्र बाल्यावस्था के अन्तिम भाग में और किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है। बालक का मस्तिष्क अत्यन्त कोमल होता है, अतः जो प्रभाव इस अवस्था में बालक पर पड़ जाता है वह

स्थायी होता है। संस्कृत साहित्य इन आदर्शों से परिपूर्ण है। अतः छात्रों को उचित प्रेरणा प्रदान कर दी जाय तो वे संस्कृत को चाव से पढ़ेंगे। इस स्तर पर तो इतने में ही संतुष्ट हो जाना चाहिए कि छात्र सरल संस्कृत को पढ़ सकें व उसे समझ सके। इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य निम्नवत् हैं—

1— छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत भाषा में लिखे हुए सरल गद्य खण्डों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ सकें।

2— उन्हें इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हुए पाठ याद कर सकें।

3— उन्हें कुछ महत्वपूर्ण श्लोकों को कंठस्थ करने की प्रेरणा प्रदान करना।

4— उन्हें इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत के कठिन से कठिन गद्यखण्डों एवं श्लोकों को उनके मुद्रित रूप को देखकर उन्हें ठीक-ठीक अपनी पुस्तिकाओं में लिख सकें।

5— छात्रों में यह योग्यता उत्पन्न करना कि वे कंठस्थ किए हुए श्लोको को शुद्ध लिख सकें।

6— उन्हें हस्त लेख का अभ्यास कराना।

7— उन्हें इस योग्य बनाना कि वे मातृभाषा के सरल श्लोकों को समझने की योग्यता प्रदान करना।

8— संस्कृत के गद्यखण्डों एवं सरल श्लोकों को समझने की योग्यता प्रदान करना।

9— छात्रों को यह योग्यता प्रदान करना कि वे आवश्यकतानुसार वाक्यों एवं श्लोकों का मातृभाषा में अनुवाद कर सकें।

उपर्युक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए जूनियर स्तरीय कक्षाओं के संस्कृत अध्यापकों तथा संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापकों का एक तीन दिवसीय कार्यशाला संस्कृत भाषा शिक्षण की आयोजित की गयी।

कार्यालय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बीसलपुर - पीलीभीत

संस्कृत भाषा एवं व्याकरण सम्बन्धी कार्यशाला

दिनांक 25-2-93 से 27-2-93 तक

क्र०सं०	अध्यापक का नाम	विद्यालय का नाम		विकास क्षेत्र
1	—श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा	उ० प्रा० वि०	सबलपुर	पूरनपुर
2	—,, हरनन्दन सक्सेना	,,	खनंका	बीसलपुर
3	—,, बाबू राम गंगवार	,,	दियोरिया कला	बिलसण्डा
4	—,, मूलचन्द	,,	बस्थना	मरौरी
5	—., लाला राम	,,	रढैता	बीसलपुर
6	— ,, रघुबर दयाल	,,	,,	,,
7	—,, बृज लाल	,,	सिसैया जलालपुर	,,
8	—,, राधा कृष्ण शुक्ला	,,	चुर्रासकतपुर	,,
9	—,, बलवन्त सिंह गंगवार	,,	निजामडांडी	ललौरी खेड़ा
10	—,, जगतपाल सिंह	,,	दियोहना	बरखेड़ा
11	—,, बृज राज किशोर शर्मा	,,	गजरौला	मरौरी
12	—,, ओम प्रकाश गंगवार	,,	कनाकोर	ललौरी खेड़ा
13	—,, नत्थू लाल	,,	बमरौली	बीसलपुर
14	—,, उमा शंकर	,,	करेली	बिलसण्डा

जूनियर स्तरीय सेवारत सहायक अध्यापकों का त्रिदिवसीय संस्कृत व्याकरण का पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण

दिनांक 25-2-93 से 27-2-93 तक

प्रथम दिवस

समय	कार्यक्रम
8-30 से 9-30 तक	सर्व धर्म प्रार्थना
9-30 से 10-00 तक	चाय
10-00 से 11-00 तक	पंजीकरण
11-00 से 12-00 तक	उद्घाटन
12-00 से 1-00 तक	व्याकरण की आवश्यकता
1-00 से 2-00 तक	भोजन
2-00 से 3-00 तक	अतिथि वक्ता
3-00 से 4-00 तक	व्याकरण के अनुभागों की चर्चा
4-00 से 5-00 तक	खेल (मनोरंजन)

द्वितीय दिवस

8-30 से 9-30 तक	सर्व धर्म प्रार्थना
9-30 से 10-00 तक	चाय
10-00 से 11-00 तक	संधि नियमन
11-00 से 12-00 तक	अतिथिवक्ता
12-00 से 1-00 तक	परिचर्चा
1-00 से 2-00 तक	भोजन
2-00 से 3-00 तक	रूपनिष्पत्ति
3-00 से 4-00 तक	अलंकारिक ज्ञान
4-00 से 5-00 तक	खेल (मनोरंजन)

तृतीय दिवस

8-30 से 9-30 तक	सर्व धर्म प्रार्थना
9-30 से 10-00 तक	चाय
10-00 से 11-00 तक	अनुवादक प्रक्रिया
11-00 से 12-00 तक	व्याकरण शिक्षण कठिनाई
12-00 से 1-00 तक	अतिथि वक्ता
1-00 से 2-00 तक	भोजन
2-00 से 3-00 तक	निबन्धात्मक स्वरूप
3-00 से 4-00 तक	मूल्यांकन
4-00 से 5-00 तक	समापन

विचार-गोष्ठी

"उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा की सम्भावना एवं इसमें जन शिक्षण निलयम की भूमिका"

दिनांक 23-1-93 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में जनपद पीलीभीत के प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की एक दिवसीय इस विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के निम्नांकित उद्देश्य थे।

1—उत्तर साक्षरता की आवश्यकता।

2—सतत शिक्षा क्यों आवश्यक है।

3—सतत शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन क्या भूमिका निभा रहे हैं।

4—स्थानीय जनता की इसमें क्या सहभागिता होनी चाहिये।

5—शिक्षण संस्थाओं की इसमें क्या भूमिका होगी।

6—जन शिक्षण निलयम एवं इनकी इस क्षेत्र में क्या प्रभाविता होगी।

विचार गोष्ठी में जनपद के 45 प्रधानाध्यापकों ने प्रतिभाग किया। गोष्ठी में उत्तर साक्षरता, सतत शिक्षा तथा जन शिक्षण निलयमों के बारे में जानकारी दी गयी तथा उक्त बिन्दुओं पर चर्चा हुई। सभी प्रतिभागियों ने विचार गोष्ठी में सक्रियता से भाग लिया।

उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा की सम्भावनायें इनमें जन शिक्षण निलयम की भूमिका

जो व्यक्ति पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक स्तर तक या उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। उनको जीवन में दैनिक कार्यों के सम्पादन में अर्जित शिक्षा कौशल के विकास करने का अवसर मिलता रहता है। लेकिन जो प्राथमिक शिक्षा का स्तर प्राप्त करने के बाद पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के कारण आगे को नहीं पढ़ पाते या उनके शिक्षा का क्रम टूट जाता है। उनके लिए ही उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा की आवश्यकता होती है। वह अपने व्यवसाय, उत्तर-दायित्व और विभिन्न अन्य सीमाओं में रहते हुए शिक्षा का क्रम जारी रख सकें, यही सतत शिक्षा का उद्देश्य है। सतत शिक्षा को कार्यान्वित करते समय निम्नांकित दो बातें ध्यान देने योग्य हैं :—

1—व्यक्ति जहाँ जिस परिवेश में है, वहीं उसके जीवन तथा शैक्षिक स्तर के साथ शिक्षा को जोड़ा जाय तथा

2—शिक्षा का विषय एवं पद्धति ऐसी हो कि व्यक्ति की तात्कालित आवश्यकताओं एवं अभिरुचियों से मेल खा सके तथा उसके जीवन में उपयोगी हो।

यद्यपि पारिभाषिक शब्दावलियों के हिसाब से उत्तर साक्षरता (Post literacy) तथा सतत शिक्षा (Continuing Education) अलग-अलग तथ्य हैं। उत्तर साक्षरता किसी निरक्षर व्यक्ति को साक्षर करने के बाद साक्षरता को सुदृढ़ करने के लिए मोटे अक्षरों में लिखे सरल साहित्य द्वारा जीवन के दैनन्दिन आवश्यकताओं के विषयों की जानकारी देना हैं ताकि वह साक्षरता को साधन बनाकर विकास कार्यक्रमों, उद्योग-धन्धों तथा आवश्यक सूचनाओं का आदान प्रदान कर सके, राष्ट्र की प्रगति की धारा में जुड़ सके।

सतत शिक्षा उत्तर साक्षरता से भी अधिक व्यापक है मनुष्य जीवन से मरण तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। इस प्रक्रिया में शिक्षा सम्बन्धी समुचित दिशा निर्देश तथा साधन उपलब्ध कराना ही उस व्यक्ति की सतत शिक्षा है।

शिक्षाविदों ने सतत शिक्षा की सफलता के लिए कुछ विधियों तथा प्रविधियों को सुझाया है।

1—**पत्राचार पाठ्यक्रम** :- यह पाठ्यक्रम शिक्षा संस्थाओं, विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित किए जाते हैं। इनका क्षेत्र व्यापक हैं तथा बहुत उपयोगी होते हैं। स्थानीय आवश्यकताओं तथा अभिरुचियों पर आधारित होते हैं।

2—**महिलाओं के लिये संक्षिप्त पाठ्यक्रम** :—इनके माध्यम से उन महिलाओं को लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त होता है। जिनकी पढ़ाई किन्हीं कारणों से किसी मान्यता प्राप्त स्तर तक पहुंचने के पूर्व ही छूट जाती है।

3—**ग्रीष्म कालीन पाठ्यक्रम** :—कार्यरत शिक्षकों के लाभ के लिए कतिपय विश्वविद्यालय ग्रीष्म कालीन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करते हैं ताकि अवकाश के समय वे निर्धारित स्तर तक योग्यता प्राप्त कर लें और आगे प्रगति कर सके।

4—**पुस्तकालय सेवा** :—सतत शिक्षा के लिए पुस्तकालय बहुत उपयोगी होते हैं इनमें अचल तथा सचल दोनों प्रकार के पुस्तकालय हैं।

5—**अल्प कालीन प्रशिक्षण** :—जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में कार्य कर रहा है उसको उस क्षेत्र की नवीनतम जानकारी देना।

6—**प्रसार शिक्षा** :—नवीनतम विकास कार्यक्रमों, घटनाओं तथा समय विशेष में बदलती आवश्यकताओं की जानकारी देना।

सतत शिक्षा के महत्व को शिक्षा आयोग (1966) ने भी उजागर करते हुए साक्षरता के बाद लागू करने की संस्तुति की थी।

भारत में व्यवस्थित रूप से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का श्री गणेश 2 अक्टूबर 1978 से किया गया। वर्ष 78-79 तैयारी का वर्ष रहा। 79-80 से पूरे देश में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लागू किया गया। इस कार्यक्रम को "राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम" एन० ए० ई० पी० नाम दिया गया। यह कार्यक्रम 15-35 आयु वर्ग के निरक्षर स्त्री पुरुषों को साक्षर करने के उद्देश्य से चलाया गया इस बात पर बल दिया गया कि साक्षरता के साथ-साथ प्रतिभागी को व्यावहारिक दक्षता तथा चेतना में विकास की प्राप्ति हो।

उत्तर साक्षरता तथा सतत शिक्षा भी कार्यक्रम में सन्निहित थी, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र को इस दृष्टि से दो चरणों में विभाजित किया गया था।

प्रथम चरण—प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर एक वर्ष की बुनियादी साक्षरता प्रदान करना जिसमें "प्रवेशिका" मुख्य रूप से पढ़ायी जाती थी।

द्वितीय चरण—एक वर्ष की उत्तर साक्षरता जिसको "अनुगमन कार्यक्रम" नाम से जाना जाता था। जिसमें जीवनोपयोगी सरल साहित्य को पढ़ाया जाता था या पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता था। मोटे अक्षरों में मुद्रित समाचार पत्र, किताबें होती थीं। विषय परिचय पत्रिकाएं कार्ड आदि।

कालान्तर में इसी अवधि को तीन भागों में विभाजित किया गया।

प्रथम चरण—आठ माह की बुनियादी साक्षरता

द्वितीय चरण—चार माह की उत्तर साक्षरता

तृतीय चरण—एक वर्ष का अनुगमन कार्यक्रम

5 मई 1988 से राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के स्थान पर राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गयी प्रौढ़ प्रतिभागी के समग्र विकास के लिए प्रौढ़ शिक्षा के तीन आयामों की जगह आठ आयाम निर्धारित किये गये।

1— अक्षर ज्ञान 2— अंक ज्ञान 3— कौशल विकास 4— स्वास्थ्य एवं स्वच्छता 5— सांस्कृतिक कार्यकलाप 6— सामाजिक जागृति चेतना 7— धार्मिक सौहार्द तथा 8 — राष्ट्रीय एवं मानव मूल्यों की शिक्षा।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की एक साल की बुनियादी साक्षरता कक्षाओं के स्थान पर 6, 6 महीनों के दो सत्र संचालित किये गये। उत्तर साक्षरता सतत शिक्षा के लिए एक अलग संस्थागत व्यवस्था की गयी। इस संस्था का नाम "जन शिक्षण निलयम" रखा गया इस पत्रक में जन शिक्षण निलयम पर अलग से चर्चा की गयी बुनियादी साक्षरता के लिए जो 6 माह निर्धारित किये गये इनकी विशेषता यह थी कि कम समय में शिक्षार्थी अधिक से अधिक सीख सके इसके लिए विशेष शोध अध्ययन के आधार पर सीखने की समुन्नत गति तथा विषय सामग्री (Improved Pace and Content of Learning) आई० पी० सी० एल०, प्रवेशिकाओं का निर्माण तथा प्रयोग किया गया यह प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण शोध है।

नवसाक्षर (New Literate) को उत्तर साक्षरता तथा सतत शिक्षा के लिये जन शिक्षण निलयमों में पंजीकृत तथा लाभान्वित किया जा रहा है।

जब से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लागू किया गया तभी से उसको तीन प्रकार की एजेन्सियाँ संचालित कर रही थीं—

(1) ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम (आर० एफ० एल० पी०)
(2) राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम (एस० ए० ई० पी०)
(3) जन साक्षरता कार्यक्रम (एम० पी० एफ० एल०)

(1) Rural Functional Literacy Programme.
(2) State Adult Education Programme.
(3) Mass Programme of Functional Literacy.

इसको हर एक पढ़ाए एक "Each one teach one" नारे के तहत—

—विश्व विद्यालयों के छात्रों
—एन सी. सी. क कैडेटस
—माध्यमिक शिक्षा के छात्रों द्वारा संचालित किया जा रहा है।

ग्रीष्म कालीन अवकाश में

उ० प्र० में 31 मार्च 1992 से ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता परियोजनाएँ तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम परियोजनाएँ समाप्त कर दी गयी हैं। अब यह कार्य स्वयं सेवी संस्थाएँ, राजनैतिक दल, विद्यालय के छात्र तथा समाज सेवी व्यक्ति जन आन्दोलन के रूप में जन साक्षरता कार्यक्रम के तहत निःशुल्क रूप से चलायेगें।

उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा के प्रसार में जन शिक्षण निलयम की भूमिका :—

जैसा कि ऊपर विवेचन किया जा चुका है एक या 6 माह की बुनियादी साक्षरता के बाद उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा के लिये एक वर्ष की अवधि निर्धारित की गयी थी जो कि सतत शिक्षा एवं जीवन पर्यन्त शिक्षा के रूप में अपर्याप्त थी विभिन्न शिक्षा आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की संस्तुतियों के आधार पर सतत शिक्षा को एक स्थायी तथा संस्थागत आधार पर चलाने की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अन्तर्गत न्याय पंचायत स्तर पर सतत शिक्षा को संस्थागत रूप देने के लिये जन शिक्षण निलयम (JNS) की स्थापना की गयी अब तक पूरे देश में 60000 जन शिक्षण निलयम स्थापित किये जा चुके हैं।

जनपद पीलीभीत के पूरनपुर, मरौरी, बरखेड़ा तथा बीसलपुर विकास खण्डों में 72 जन शिक्षण निलयम स्थापित किये गये हैं। 5000 की आबादी या एक न्याय पंचायत में एक जन शिक्षण निलयम स्थापित है।

जन शिक्षण निलयम का प्रभारी प्रेरक कहलाता है जो सम्बन्धित न्याय पंचायत का निवासी तथा हाई स्कूल पास व्यक्ति होता हैं उसको इस कार्य के लिये 200 रु० प्रतिमाह मानदेय दिया जाता है ।

जन शिक्षण निलयम के उद्देश्य :—

1. नव साक्षरों अल्प शिक्षितों को सतत शिक्षा की व्यवस्था करना ।
2. विकास कार्यक्रमों की जानकारी देना ।
3. उपेक्षित वर्ग की सतत शिक्षा में सहभागिता बढ़ाना ।
4. राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण संरक्षण, महिला समानता, परिवार नियोजन, आर्थिक उपलब्धियों को बढ़ाना ।
5. मनोरंजन और अच्छे जीवन की व्यवस्था करना ।

जन शिक्षण निलयम के लाभार्थी : –

जन शिक्षण निलयम निम्नलिखित वर्ग के लोगों के लिये हैं—

1. कार्यात्मक साक्षरता पाठयक्रम पूरा करने वाले नव साक्षर ।
1. जन कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम पूरा करने वाले नव साक्षर ।
3. पढ़ाई पूरी होने से पहले स्कूल छोड़ जाने वाले (ड्राप आउट)
4. प्राइमरी स्कूल से कक्षा 5 उत्तीर्ण करने वाले (जो आगे अब नहीं पढ़ रहे हैं)
5. अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम पूरा करने वाले और जहाँ तक सामूहिक गतिविधि और सांस्कृतिक कार्यक्रम का सम्बन्ध है समुदाय के सभी लोग (गाँव के सभी लोग इसके कार्यक्रमों से लाभ उठा सकते हैं)

जन शिक्षण निलयम की गतिविधियां

1— **सायंकालीन कक्षायें—**

इसका उद्देश्य है साक्षारता और गणित की कुशलताओं को बढ़ाना/कक्षाएँ सप्ताह में एक बार 3-4 घन्टे के लिये लगेंगी। उसी दिन शिक्षार्थी अपनी सुविधा से एक घन्टे के लिए आ सकते हैं।

2— **पुस्तकालय** : —

पुस्तकें और पत्रिकायें अध्ययन के लिये मिलेंगी पुस्तकालय कार्ड बनाकर घर ले जायी जा सकती हैं सचल पुस्तकालय भी होगा।

3— **वाचनालय** :—

उपयुक्त समाचार पत्र-पत्रिकाएँ बैठकर पढ़ी जायेंगी वाचनालय रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने होंगे।

4— **चर्चा मण्डल** :—

15 से 20 सदस्यों का चर्चा मण्डल होगा सप्ताह में एक बार विषय-वार्ता/चर्चा होगी।

5— **लघु कालीन प्रशिक्षण** :—

स्वास्थ्य परिवार कल्याण कृषि, पशुपालन विकास कार्यक्रम होंगे।

6— **खेल कूद और साहस पूर्ण कार्य** :—

स्थानीय खेल कूद झुन्ड़ों में साइकिल यात्रा आदि।

7— **मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम** :—

पुरानी लोक कला ग्रामीण रंगमंच कठपुतली आदि पर आयोजत होगा।

8— **सूचना कक्ष** :—

विभिन्न विकास कार्यक्रमों के बारे में सूचना पाने के लिये नव साक्षरों के लिये सूचना उपलब्ध होगी।

9— **संचार** :—

रेडियो वी० सी० आर० संचार के रूप में प्रयोग होंगे।

जन शिक्षण निलयम पर प्रेरकों को प्रतिदिन 4 घण्टे समय देना होता है।

जन शिक्षण निलयम पंचायत घर, समुदायिक विकास केन्द्र या प्रेरक द्वारा उपलब्ध कमरे में स्थापित होगा जहाँ सभी को आने जाने की अनुमति होगी। उ० प्र० सरकार ने जिला विकास अधिकारियों को स्पष्ट आदेश दिये हैं कि जवाहर रोजगार योजना की धनराशि से जन शिक्षण निलयम का भवन (एक कमरा) बनाया जाये। सतत शिक्षा के लाभार्थियों से प्रेरक सम्पर्क बनाये रखेगा, रजिस्टर पर लाभार्थियों के नाम अंकित होते हैं। प्रेरक गांव-गांव जाकर उन्हें सतत शिक्षा का साहित्य वितरित करेगा।

नरेश पन्त
परियोजना अधिकारी
(अनौपचारिक शिक्षा)
बिलसण्डा--पीलीभीत

उत्तर साक्षरता एवं सतत् शिक्षा की सम्भावना एवं जन शिक्षा निलयम की भूमिका

दिनांक 23-1-93, मु० अ० प्राथमिक विद्यालय

क्र० सं०	नाम	विद्यालय का नाम
1	श्रीमती माया देवी	प्रा. वि कैंच
2	श्रीमती वीना कुमारी	,, खागर सराय
3	श्रीमती भगवान देवी शर्मा	,, विलगवां
4	श्रीमती सुशीला सक्सेना	,, सडिया मुगलपुर
5	श्रीमती जयदेवी सक्सेना	,, दियूरी
6	श्री ओम प्रकाश शर्मा	,, लुधपुरा
7	श्री ईश्वर दयाल	,, वपरौआ कुइया
8	श्री तारा चन्द्र	,, ईशापुर
9	श्री राम मूर्ति लाल	,, पगार
10	श्री राम पाल	,, तिलछी
11	श्री रीत राम	,, बमरौली
12	श्री सन्त राम	,, बिलासपुर
13	श्री बाबू राम	,, मीरपुर-हीरापुर
14	श्री मिढई लाल	,, चारडाग उर्फ बल्देवपुर
15	श्रीमती शान्ती देवी	,, बिलहरा
16	श्रीमती सरला सक्सेना	,, सैंदपुर
17	श्री गिरीश चन्द्र	,, ओडाझार
18	श्री खेमकरन लाल	,, मरैना
19	श्रीमती आशा रानी सक्सेना	,, पिपरिया कालौनी
20	श्रीमती स्नेहलता	,, गान्धी नगर
21	श्रीमती इन्द्र बाला	,, गौहनिया नं०-2
22	श्री सेवा राम	,, कुरैया

क्रम सं०	नाम	विद्यालय का नाम	
23	श्री डोरी लाल	प्रा. वि	अमखेड़ा
24	श्री ओम प्रकाश	,,	रम्पुरिया महोद
25	श्री मेवा राम	,,	अजीत पुर
26	श्रीमती ऊषा रानी सक्सेना	,,	संडा मरैरी
27	श्रीमती सुमन कान्ति	,,	संडिया मरौरी
28	श्रीमती शशि तिवारी	,,	पिपरिया मजा मरैरी
29	श्री शिव दयाल	,,	धनगवां
30	श्री प्रेमनरायन सक्सेना	,,	पडरी मरौरी
31	श्री अशोक कुमार सक्सेना	,,	नवदिया मरौरी
32	श्री महेश चन्द्र शर्मा	,,	सैंजना
33	श्री चिरैंजी लाल	,,	बरी
34	श्री सीता राम	,,	जारकलिया
35	श्री राम प्रकाश यादव	,,	हदुआ विजिलिहाई
36	श्री राम विलास	,,	भरतपुर कालौनी
37	श्री मनोहर लाल भास्कर	,,	वन्जरिया मरौरी
38	श्री नेतराम	,,	विनौसा मरौरी
39	श्री लाल वहादुर	,,	करोंड़
40	श्रीमती उर्मिला दीक्षित	,,	न्यूरिया-1
41	श्रीमती हेम लता	,,	गौहनिया
42	श्रीमती परमिन्दर कौर	,,	बिथरा
43	श्रीमती बीरबाला त्रिवेदी	,,	मुडैला कला
44	श्रीमती मुन्नी देवी	,,	मडरिया
45	श्रीमती खैरुन निशा	,,	गोहर मरौरी

प्रधानाध्यापकों की एक दिवसीय पर्यावरणी गोष्ठी

प्रधानाध्यापक प्राइमरी विद्यालय का मस्तिष्क है। उसकी कुशलता, दक्षता पर ही विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था की सफलता निर्भर करती है। आज पर्यावरण अत्यन्त दूषित हो गया है जिससे जीवधारियों का अस्तित्व खतरे में पड गया और यदि मनुष्य की पर्यावरण को लेकर ऐसी ही उदासीनता रही तो निकट भविष्य में मानव जीवन का अस्तित्व इस धरा पर खतरे में पड जायेगा।

पर्यावरण की महत्ता को बालक को बचपन से ही अवगत कराना होगा ताकि पर्यावरण को और अधिक दूषित होने से रोका जा सके। इसलिये प्रधानाध्यापकों की एक दिवसीय गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें चर्चा के बिन्दु निम्नवत थे—

1—क्षेत्रीय पर्यावरण की वास्तविकताओं के आधार पर विद्यालय में कौन-कौन सी गतिविधियाँ आयोजित की जायें।

2—बालक-बालिकाओं में पर्यावरण संरक्षण के प्रति रुचि तथा जागरूकता पैदा करने के क्या आयाम होंगे ?

3—पारिस्थितिकी विज्ञान, वन्य जीवन, उत्तम स्वास्थ्य का शिक्षण किन-किन बिन्दुओं पर प्राथमिकता के आधार पर कराया जाय।

4—बालक/बालिकाओं को घर, आँगन, शरीर, वस्त्र तथा विद्यालय प्राङण को कैसे स्वच्छ रखा जाय।

सारांश

अध्यापकों को इस गोष्ठी में अवगत कराया गया कि पर्यावरण के घटक, पर्यावरणीय प्रदूषण, प्रदूषण निराकरण के उपाय, प्राकृतिक पर्यावरण- नदी पहाड़, झरना, वन, पर्यावरण तथा प्राणी जगत का सम्बन्ध क्या है ? जल

प्रदूषण, कारण तथा निवारण, वायु प्रदूषण – हानिकारक गैसें, ओजोन पर्त, मृदा प्रदूषण। निराकरण के अन्तर्गत सामाजिक वानिकी पौष्टिक एवं जीवाणु रहित आहार।

शिक्षकों के लिये विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि आज शिक्षण में प्रभावी साधन के रूप में स्थानीय पर्यावरण का अधिक से अधिक शिक्षण किया जाय। सम्पूर्ण पर्यावरण प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण के योग से बनता है तथा प्राणि जगत का पर्यावरण से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

विद्यालय में पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तावित किये जा सकते हैं—

1—शिक्षक बालकों को उनके परिवेश में विद्यमान पर्यावरण सम्बन्धी घटकों की जानकारी दें। छात्रों को सम्प्रेक्षण (आबजर्वेशन) के लिये तैयार किया जाना चाहिये।

2—मिट्टी के कटाव में कौन-कौन सी बातें मुख्य होती हैं, अबाँछित मिट्टी के कटान को कैसे रोका जाय।

3—छात्र अपने आस-पास के जल-स्रोतों को गन्दा होने से बचाने में सहयोग दें।

4—वन्य जन्तुओं के प्रति उनमें प्रेम पैदा किया जाय।

5—वायु प्रदूषण के कारण एवं निवारण पर छात्रों को ज्ञान दिया जाय।

6—वृक्षारोपण के लिये प्रोत्साहित किया जाय।

7—छात्रों के पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का मूल्यांकन करते समय छात्रों की मानसिक क्षमता का विकास, पर्यावरण के सम्बन्ध में जागरूकता तथा किये गये प्रयासों को ध्यान में रखना चाहिये।

विचार गोष्ठी के निष्कर्ष

1—उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा ऐसे व्यक्तियों के लिये विशेष महत्व-पूर्ण है जो अपनी शिक्षा आगे जारी नहींरख सकते हैं तथा जो कम शिक्षित हैं। इनके अभाव में उनके पुनः निरक्षर हो जाने तथा प्राप्त शिक्षा का कोई लाभ न उठा पाने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

2—इन कार्यक्रमों के माध्यम से वे अपनी साक्षरता को स्थायी रख सकते हैं तथा उसके द्वारा अन्य अनुभव अर्जित कर अपने व्यवसाय आदि में भी उन्नति कर सकते हैं।

3—अपने अवकाश के समय का सदुपयोग कर सकते हैं।

4—उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अपने ग्रीष्म कालीन अवकाशों में कार्यक्रम आयोजित करते हैं। जो पर्याप्त नहीं है।

5—जन शिक्षण निलयमों की स्थापना से इस कार्यक्रम में अधिक सफलता मिलेगी और ये अधिक प्रभावी होंगे।

6—जन शिक्षण निलयमों के माध्यम से पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी अपनी शिक्षा जारी रखने में बहुत योगदान मिलेगा।

7—चूँकि जन शिक्षण निलयमों में चलती फिरती पुस्तकालय का भी प्राविधान है अतः जो व्यक्ति केन्द्र तक नहीं जा सकते वे भी इनसे लाभान्वित होंगे।

8—उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा के क्षेत्र में जन शिक्षण निलयमों की स्थापना महत्वपूर्ण है ये स्थायी केन्द्र होंगे। इसलिए इनका प्रभाव अधिक होगा।

9—इनकी सफलता स्थानीय जनता के सहयोग पर निर्भर करती है अतः वह इसमें महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। नव साक्षरों को प्रेरित करके जन-शिक्षण निलयमों में भेजने जन शिक्षण निलयमों के कार्यकलापों में सक्रिय भाग लेकर इनकी प्रभाविता बढ़ा सकते हैं।

10—जन शिक्षण निलयम केन्द्र की परिधि के सभी प्राथमिक जूनियर विद्यालयों के प्रधानाध्यापक भी इसके सदस्य होंगे तथा उनके यहां से कक्षा 5 उत्तीर्ण तथा कक्षा 6 से 8 तक अध्ययन कर रहे छात्रों की सूची जन शिक्षण निलयमों में उपलब्ध करायेंगे जिसे उनको भी इनसे लाभान्वित किया जा सकेगा।

11—इस प्रकार उत्तर साक्षरता व सतत शिक्षा के क्षेत्र में जन शिक्षण निलयम महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

पर्यावरणीय शिक्षा

मानव विकास का इतिहास पर्यावरण के विभिन्न घटकों से जुड़ा हुआ है। इनमें प्राकृतिक पर्यावरण अधिक महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक पर्यावरण में मुख्यत: भूमि धरातल, चट्टान, खनिज, जल स्रोत, जलवायु, जीव-जन्तु एवं वनस्पति आदि आते हैं।

आज बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण, औद्योगीकरण तथा आधुनीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से पर्यावरण का अविवेक पूर्ण दोहन हो रहा है। जिससे पर्यावरण में लगातार असंतुलन बढ़ता जा रहा है। मिट्‌टी के निरन्तर कटाव से भूमि की उपजाऊ शक्ति घट रही है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, वन विनाश आदि से मानव जीवन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। पृथ्वी पर जीवन के लिये खतरा उत्पन्न हो गया है। पर्यावरण की वर्तमान स्थिति से सारा विश्व चिन्तित है। हर देश में पर्यावरण के असंतुलन को सुधारने के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। पर्यावरण का सुधार तभी हो सकता है जब जन साधारण में इससे सम्बन्धित चेतना जाग्रत की जाये। इसी कारण पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है। पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से छात्रों में प्रारम्भ से ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति उचित आदतों अभिवृत्तियों एवं कौशलों का विकास किया जा सकता है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी पर्यावरण को बेहतर बनाने के कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर बल दिया गया है। अत: इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि प्रारम्भिक कक्षाओं से ही पर्यावरणीय शिक्षा को पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाय।

सामान्य उद्देश्य

1—क्षेत्रीय पर्यावरण की वास्तविकताओं के आधार पर अनेक गति-विधियों के विकास में पर्यावरण का उपयोग करना।

2—बालक-बालिकाओं में निरीक्षण एवं अन्वेषण द्वारा प्रकृति और मानव के बीच अन्त: सम्बन्धों को समझने की क्षमता का विकास करना।

3—बालक-बालिकाओं में अपने शरीर की कार्य करने की प्रक्रिया के ज्ञान के द्वारा मनुष्य प्रकृति का अंग है यह समझने की क्षमता का विकास करना।

4—कम से कम समय में परिस्थिति जन्य आवश्यकता का ज्ञान कराना।

5—परिस्थितिकी, पर्यावरण संरक्षण, वन्य जीवन, उद्योग, स्वास्थ्य, षोषण आदि से सम्बन्धित पक्षों का बोध कराना।

6—छात्रों में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हानियों के प्रति सजगता उत्पन्न करना।

7—पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने के लिये छात्रों को उनके स्तर पर तैयार करना।

अध्यापकों के लिए सामान्य निर्देश

1—अध्यापक कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विषयों की शिक्षा में क्षैत्रीय पर्यावरण तथा वास्तविकताओं पर आधारित गतिविधियों को आधार मानकर शिक्षा प्रदान करें।

2—शिक्षक छात्रों को पर्यावरण के संदर्भ में, विद्यालय परिसर उसके पास पड़ोस में पायी जाने वाली वस्तुओं को उपयोग में लाकर शिक्षण करें।

3—शिक्षक बालक-बालिकाओं में निरीक्षण एवं अवलोकन क्षमता का विकास करके मानव और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञान कराये और उन्हें मधुर बनाने का प्रयास करें।

4—छात्रों की जिज्ञासा के परिशमन, परिशोधन एवं परिमार्जन में प्रकृति के स्वरूप को समझाने का प्रयास करें।

5 - वर्तमान परिवेश में पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता से छात्रों को अवगत कराते हुये भूगोल, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कृषि आदि विषयों का अध्यापन करें। शिक्षक द्वारा कहानी, भावगीत, कविता, चुटकुले आदि के माध्यम से पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान प्रदान किया जाय।

6—छात्रों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में मानव तथा प्रकृति के साथ तादाम्य स्थापित करने का प्रयास करें।

अधिगम बिन्दु

पर्यावरण के घटक, पर्यावरणीय प्रदूषण, प्रदूषण के निराकरण के उपाय प्राकृतिक पर्यावरण नदी, पहाड़, झरना, वन, पर्यावरण तथा प्राणि जगत का

सम्बन्ध। जल– जल प्रदूषण कारण तथा निवारण के उपाय। वायु– वायु-मण्डल लाभप्रद तथा हानिकारक गैसें, वायुमण्डल का प्रदूषण कारण तथा निवारण, मृदा प्रदूषण, मृदा संरक्षण, सामाजिक वानिकी, आहार, जीवाणु रहित भोजन, पर्यावरण का संरक्षण, वृक्षारोपण वन सरक्षण आदि।

शिक्षण संकेत

शिक्षकों के लिये विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि आज शिक्षण अधिगम के प्रभावी साधन के रूप में स्थानीय पर्यावरण का अधिकाधिक प्रयोग करने पर बल दिया जा रहा है। पर्यावरण में अधिगम की विषय वस्तु भी सम्मिलित है तथा अध्यापन कला के साधन के रूप में भी वह प्रभावी सिद्ध हो रहा है। अत: शिक्षक द्वारा छात्रों को स्थानीय परिवेश में ले जाकर पर्यावरण का प्रेक्षण कराया जाय तथा वार्तालाप द्वारा छात्रों को पर्यावरण में प्राप्त तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करें। सम्पूर्ण पर्यावरण प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण के योग से बनता है तथा प्राणि जगत का पर्यावरण से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। पर्यावरण का संरक्षण मनुष्य सहित सभी प्राणियों के लिये आवश्यक है। अत: पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में अनुकूल चेतना विकसित करना परम आवश्यक है।

प्रस्तावित क्रियायें

1– शिक्षक बालकों को उनके निकटवर्ती पर्यावरण का प्रेक्षण कराये। आस-पास के धरातल, मिट्टी, खनिज, जल जीव जन्तु पेड़-पौधों का छात्र सावधानी से प्रेक्षण करें। शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से मानव के लिये उनकी उपयोगिता का ज्ञान कराये प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ सामाजिक पर्यावरण की ओर भी छात्रों का ध्यान आकर्षित करें।

2—मिट्टी के कटाव से उसकी उपजाऊ शक्ति नष्ट होती है। इस दृष्टि से छात्र मिट्टी के कटाव को रोकें। अनावश्यक रूप सड़कों, रेलवे लाइनों के आस-पास मिट्टी त काटी जाय।

3—छात्रों में उन आदतों का विकास हो जिससे वे अपने आस-पास के जल स्रोतों जैसे–नदी, तालाब, झील, कुओं आदि के जल को गंदा होने से बचायें। उनमें सड़ी गली वस्तुयें न फेंकें, न ही उनमें पशुओं को जाने दें और कपड़े धोयें। सिचाई तथा जल विद्युत के उत्पादन में शिक्षक द्वारा जल के महत्व को स्पष्ट किया जाय।

4—आस-पास जीव जन्तु मानव के लिये उपयोगी है। इसलिये छात्र न

तो उन्हें कष्ट दें और न उन्हें जान से मारे। छात्रों को 'पशु विहार' पक्षी-विहार बनाने की जानकारी दी जा सकती है।

5—वायु प्रदूषण के सम्बन्ध में छात्रों को सजग किया जाय। शुद्ध वायु हमारे लिये कितनी महत्वपूर्ण है। इसके बिना हम सांस भी नहीं ले सकते। अत: वायुमण्डल को प्रदूषण से बचाया जाय। मल-मूत्र या गंदी वस्तुयें बस्ती से दूर फेकी जायें। मरे जानवरों को जमीन में गाड़ दिया जाय। कारखाने की चिमनियों, वाहनों से जो प्रदूषण फैल रहा है उसके लिये वृक्षों का संरक्षण और वृक्षारोपण किया जाय।

6—छात्रों को वृक्षारोपण 'वन संरक्षण' के ढंग बताये जायें। विद्यालय परिसर में यथासम्भव अधिकाधिक वृक्षारोपण किया जाय। स्थानीय समुदाय का सहयोग लेकर यह कार्यक्रम अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

7—छात्रों को कृषि के योग्य भूमि के संरक्षण के सम्बन्ध में बताया जा सकता है। भवनों, कारखानों, सड़कों के निर्माण में इस बात का ध्यान रखने की आवश्यकता को भी छात्रों को समझाया जा सकता है।

8—छात्रों को समीपवर्ती अच्छे जंगलों, जल स्रोतों एवं चरागाहों का प्रेक्षण कराया जा सकता है। उनके अच्छे प्रबन्ध और उपयोगिता का भी ज्ञान कराया जा सकता है।

9—इस स्तर पर छात्रों को अपने जनपद तथा क्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याओं से अवगत कराया जाना चाहिए और उन्हें उन समस्याओं से निराकरण हेतु सक्रिय सहयोग देने के लिये उचित अभिवृत्ति का विकास किया जा सकता है छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं को निकट से समझने के अवसर प्रदान करके उनके सुलझाने की प्रेरणा दी जानी चाहिये।

10—शिक्षक छात्रों को पर्यावरण के बिभिन्न घटकों के मध्य संतुलन बिगड़ने से होने वाली हानियों से परिचित कराये। इस हानि के रोकने और संतुलन स्थापित करने के व्यावहारिक उपाय भी छात्रों को समझाये जा सकते हैं।

मूल्यांकन

किसी भी विषय की शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उसका मूल्यांकन किया जाना भी अति आवश्यक है। मूल्यांकन से छात्र की प्रगति और अध्यापक को अपने कार्य की सफलता का बोध होता है। छात्रों के ज्ञान का मूल्यांकन करते समय उनकी मानसिक क्षमता का विकास, पर्यावरण के सम्बन्ध में जागरुकता, उसके संरक्षण के सम्बन्ध में किये गये प्रयासों का मूल्यांकन किया जाना

चाहिये । इस सम्बन्ध में छात्रों से प्रश्नों के उत्तर लिये जायें तथा उनके व्यवहार गत अपेक्षित प्रगति की जानकारी भी की जा सकती है । छात्रों में पर्यावरण के प्रति भावनात्मक अभिवृत्तियों तथा आदतों का विकास कहाँ तक हुआ है । इसकी जानकारी करना भी परम आवश्यक है । शिक्षक छात्रों के प्रति दिन के व्यवहार उनके कार्यों आदि का प्रेक्षण करके उनकी प्रगति एवं शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन कर सकता है ।

छात्रों की इस सम्बन्ध में दैनिक प्रगति का अभिलेख भी रखा जाना उचित होगा । इसके आधार पर उन्हें श्रेणियाँ, प्रमाण पत्र आदि भी दिये जा सकते हैं । मूल्यांकन में उन्हें कुछ अंक भी दिये जा सकते हैं ।

नरेश पन्त
परियोजना अधिकारी
(अनौपचारिक शिक्षा)
बिलसन्डा—पीलीभीत

पर्यावरण गोष्ठी

दिनांक 29-3-93

क्रम सं०	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
1—	श्री दया राम	प्रा० वि० आमडाडा
2—	,, लाला राम	,, उमरिया
3—	,, बालजीत	,, बेला डान्डी
4—	., निर्भय चन्द्र	,, पैनिया रामकृष्ण
4—	,, होरी लाल	,, कढैया कनपारा
6—	,, मिढई लाल	,, चाटडाग उर्फ वल्देवपुर
7—	,, प्रिय शंकर	,, अहिर वाडा
8—	,, शिवरत्न लाल	,, मडवा सुमन
9—	,, हरनन्दन प्रसाद	,, रसायाँ खानपुर
10—	,, मोहम्मद शफी उल्ला	,, नरायन ठेर
11—	,, नेत राम	,, पतरसिया
12—	,, भूप राम	,, कढैला उर्फ फैजुल्लागंज
13—	,, बूज लाल	,, गाजीपुर कुन्डा
14—	,, बनवारी लाल	,, नरायन पुर
15—	,, बाबू राम गंगवार	,, सिमरा अकबरगंज
16—	,, रियाज हुसैन चिस्ती	,, रम्पुरा नगरिया
17—	,, छोटे लाल	,, कितनापुर
18—	,, रोशन लाल	,, लुहिया
19—	,, श्याम लाल	,, जसकरनापुर
20—	,, मूल चन्द्र	,, बीरमपुर
21—	,, रामौतार	,, कुसमा

क्र०सं०	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
22—	श्री उमाचरन	प्रा० वि० साफर
23—	,, साबिर हुसैन	,, रजुआपुर
24—	,, मेहरबान	,, पहाड़गंज
25—	,, राम चन्द्र लाल	,, उल्लिका
26—	,, हेम राज	,, हाफिजनगर बन्नाई
27—	,, राधे श्याम	,, पटनिया
28—	,, समर सिंह	,, सिसैया जलालपुर
29—	,, सकट लाल	,, नरोत्तम नगला
30—	,, राम बहादुर	,, अखोला
31—	,, परसादी लाल	,, कुरैया फूटा कुँआ
32—	,, नत्थू लाल	,, आमडार
33—	,, सिया राम	,, कटवारा
34—	,, गोधन लाल	,, गंगापुरी
35—	,, दुर्ग पाल सिंह	,, रिछौला धामी
36—	,, तेज राम	,, अभयपुर चेनानकटी
37—	,, बिहारी लाल	,, गझाडा
38—	,, गौरी शंकर	,, मुडिया हुलास
39—	,, फूल चन्द्र	,, खगाई
40—	, इशरतुल्ला चिस्ती	,, दौलतपुर हीरा
41—	,, बाबू राम	,, चौसरहरदा पट्टी
42—	,, तुरसी राम	,, सोरहा
43—	,, छोटे लाल	,, बहुआ
44—	,, होरी लाल	,, गुलदा गौटिया
45—	,, सेवा राम दीक्षित	,, फत्तेपुर
46—	,, सुन्दर लाल	,, मटेहना
47—	,, सुरेश चन्द्र	,, रामपुर अमृत
48—	,, सेवा राम	,, रिछौला सबल
49—	,, जयन्ती प्रसाद	,, सुजनी

क्र० सं०	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
50—	श्री राम चन्द्र लाल	प्रा० वि० डडिया राजै
51—	,, दामोदर दास	,, गोबल
52—	,, दामोदर दास	,, मसरहा
53—	,, राम स्वरूप	,, अहिरपुरा
54—	,, गया प्रसाद	,, भैसटा जलालपुर
55—	,, प्यारे लाल	,, खनंका
56	,, कुवर सेन	,, भीकमपुर
57—	,, रघुवीर सहाय	,, सफौरा
58—	,, जसबन्त लाल	,, रढैता
59—	,, राम प्रताप	,, रायपुर
60—	,, तारा चन्द्र	,, लाडपुर
61—	,, चिम्मन लाल	,, पत्तपेड़ा पुखा
62—	,, कढे राम भारती	,, अधकटा
63 —	,, जौकी राम	,, पुरैनिया रामगुला
64—	,, ख्याली राम	,, मछैया
65 —	,, वीरेन्द्र कुमार मिश्र	,, नौबआ नगला
66—	,, राम स्वरूप	,, बरखेड़ा यावसीन
67—	,, जगदीश प्रसाद गंगवार	,, पुरैना
68—	,, राम भरोसे लाल	,, दिकलिया
69 —	,, हरि प्रसाद	,, परैवा अनूप
70—	,, हरि प्रसाद	,, बर्रामऊ
71—	,, जयदेव कुवर	,, परासी रामकृशन
72—	,, जग देव	,, मिघौना
73—	,, राम भरोसे लाल	,, सावेपुर
74—	,, सिया राम	,, नकटा मुरादाबाद
75—	,, नेम चन्द्र	,, मूसेपुर खुर्द
76—	,, बाबू राम	,, अमखेड़ा

क्र० सं०	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
77—	श्री देवकी नन्दन	प्रा० वि० अरसिया बोझ
78—	,, पूरन लाल	,, बहादुर हुक्मी
79—	,, बीर देव	,, हीरा पुर दुही
80—	,, रामौतार दीक्षित	,, दालमियाँ मरौरी
81—	,, अनोखे लाल	,, गंगापुर
82—	,, हेत राम	,, महादेवा
83—	,, राम प्रसाद	,, दुर्गापुर बड़गवां
84—	,, भीम सेन शर्मा	,, बिठौरा कला
85—	,, डोरी लाल	,, शिवपुरी नवदिया
86—	,, बाबू राम	,, भसंडा
87—	,, लाला राम	,, दौलापुर
88—	,, साहिद हुसैन चिस्ती	,, मीरपुर गिरन्द
89—	,, राम दास	,, बकैनियां
90—	,, श्याम लाल	,, महिद खास
91—	,, ब्रजपाल सिंह	,, शहबाजपुर
92—	,, अयोध्या प्रसाद	,, ईटा रोढ़ा
93—	,, ओम प्रकाश	,, रम्बोझा
94—	,, होरी लाल	,, ढकिया सकिया
95—	,, हरिप्रसाद गंगवार	,, अमरा करोड़
96—	,, राम लाल	,, रामनगर (बरखेड़ा)
97—	,, काली चरन	,, चन्दपुरा
98—	,, बालक राम	,, पडरी खमरिया
99—	,, सुन्दर लाल	,, अर्जुनपुर
100—	,, नन्हू लाल	,, भदारी
101—	,, बाबू राम	,, नवदिया भगत
102—	,, रामौतार गंगवार	,, कनगवां
103—	,, रामचरन लाल	,, काजर बोझी

क्र० सं०	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
104—	श्री चिरौजी लाल	प्रा. वि. केशोपुर
105—	,, अमीर चन्द्र गंगवार	,, लखनऊ कला
106—	,, बाबू राम	,, नवादा खेड़ा
106—	,, राम पाल शुक्ला	,, दियोनिया बहादुरगंज
108—	,, राम नरेश शुक्ला	,, मोहनपुर
109—	,, ओम प्रकाश	,, रम्पुरा महोफ
110—	,, रेवाराम	,, कुरैया
111—	,, मनोहर लाल भास्कर	,, बन्जरिया (मरौरी)
112—	,, छेदा लाल	,, बसारा
113—	,, बाबूराम गंगवार	,, खामधार वल्देवपुर
114—	,, मदन लाल	,, बीसलपुर दुर्गापूर
115—	,, रामदास गंगवार	,, गजरौला
115—	,, धर्मपाल	,, रम्पुरा नत्थू
117—	,, झाझन लाल	,, सौधा
218—	,, सुरेश चन्द्र	,, बखतापुर
119—	,, अजीजुल्ला	,, खमरिया पड़री
120—	,, लाल बहादुर	,, करोड
121—	,, राम कृष्ण मिश्र	,, खजुरिया पचपेड़ा
122—	,, रामेश्वर दयाल	,, दौलतपुर पट्टी
123—	,, फूल चन्द	,, रसूलपुर पचपुखरा
124—	,, छोटे लाल	,, बढ़ेरा
125—	,, निराकार देव	,, नगरा फिजा
126—	,, सत्यपाल सिह	,, पौनिया हिम्मत
127—	,, गंगाधर मिश्र	,, तकिया दीनारपुर
128—	,, शिव दयाल	,, धनगवाँ
129—	,, सीता राम	,, मलकापुर
130—	,, भीमसेन	,, बसई परैना

क्र. सं.	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
131	—श्री नेतराम	प्रा. वि. बिनौसा
132	— ,, राम निवास	,, कबूलपुर
133	— ,, हरद्वारी लाल	,, विजयनगर
134	— ,, तेजराम	,, चठिया सेवाराम
135	— ,, माखन लाल	,, भैंसहा ग्वालपुर
136	— ,, हरि प्रसाद	,, बकैनिया दीक्षित
137	— ,, सतीश चन्द्र मिश्र	,, खरदहाई
138	— ,, ओम प्रकाश वर्मा	,, लुधपुरा
139	— ,, राधा कृष्ण	,, बौनी
140	—श्रीमती राजकुमारी देवी	,, नवीन दुबे
141	— ,, माया देवी	,, बीसलपुर गांधी प्रा. स्कूल
142	— ,, सरोजबाला	,, करमापुर माफी
143	—श्री हरस्वरूप शुक्ला	,, माझीगवां
144	— ,, सुख दयाल वर्मा	,, रोहनिया
145	— ,, जवाहर लाल	,, परेई
146	— ,, वेद प्रकाश पाण्डेय	,, भोपतपुर
147	— ,, बहादुर लाल	,, बरसिया
148	— ,, मैकू लाल	,, पिपरिया करम
149	— ,, विष्णु कुमार	,, हेमपुर
150	— ,, बृज लाल	,, बहिता
151	— ,, नत्थू लाल	,, सिधौरा बिदुआ
152	— ,, सीता राम	,, रहमानगंज
153	— ,, प्यारे लाल	,, बढ़ेपुरा
154	— ,, जमुना प्रसाद	,, पिपरिया मण्डन
155	— ', नरायन लाल	,, मुडिया कुडरी
156	— ,, युधिष्टर वीर	,, सेखापुर
157	— ,, सियाराम	,, मसीत

क्र. सं	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
158—	श्री उमा चरन	प्रा. वि. मसेपुर कला
159—	,, माखन लाल	,, शहपुरा
160—	,, मिश्री लाल	,, पिपरा खास
161—	,, भोला नाथ	,, जोगीठेर
162—	,, राम दुलारे	,, कासिमपुर
163—	,, मुहम्मद हुसैन	,, करनापुर
164—	,, दुर्गा प्रसाद	,, बिकरनापुर
165—	,, राम स्वरूप	,, इमलिया फूटाकुआ
166—	,, नरायन लाल	,, शेरगंज
167—	,, रामेश्वर दयाल	,, मानपुर मरौरी
168—	,, नत्थू लाल	,, डडिया भगत
169—	श्रीमती रियाजी बेगम	,, अमृताखास
170—	,, शशी तिवारी	,, पिपरिया भजा
171—	,, सुमन कान्ती	,, सड़िया मुगलपुरा
172—	,, ऊषा रानी सक्सेना	,, स्लड़ा
173—	,, दुर्गा देवी	,, बरखेड़ा नं० 2
174—	,, बिन्द्रा देवी	,, मचवा खेड़ा
175—	,, शारदा देवी	,, पतरासा
176—	,, विजय लक्ष्मी	,, भमौरा
177—	,, मुन्नी देवी गुप्ता	,, भडरिया
178—	,, उर्मिला दीक्षित	,, न्यूरिया नं० 1
179—	,, विमला जौहरी	,, टाँडा बिजौसी
180—	,, हेमलता	,, गौहनिया नं० 1
181—	,, सुमन देवी	,, ढकिया महक
182—	,, रामदुलारी रस्तोगी	,, परसिया
183—	,, माया देवी	,, गजरौला
184—	,, सरला सक्सेना	,, सैदपुर

क्र. सं.	नाम प्रधानाध्यापक	विद्यालय का नाम
185—	श्रीमती इन्द्र बाला	प्रा. वि. गौहनिया नं० 2
186—	,, अनुपम सक्सेना	,, नागफन
187—	,, शान्ती देवी	,, नावकूड
188—	,, माया देवी	,, कैंच
189—	,, भगवान देवी शर्मा	,, बिलगवाँ
190—	,, बीना कुमारी	,, खाग सराय
191—	,, आशा रानी सक्सेना	,, पिपरिया कालौनी
192—	श्री बृज नन्दन प्रसाद	,, मूसेपुर जयसिंह

NIEPA DC
D07760

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No D-7760
Date 30-09-93